'अलकुरआन' व कुल जाअल हक़्कु व ज़हक़ल बातिल

तरजुमा;और फरमा दिजिए कि हक़ आ गया और बातिल मिट गया

मुहम्मद की मुहब्बत दीने हक़ की शर्ते अव्वल है

इसी में हो अगर खामी तो सब कुछ न मुकम्मल है

पैग़ामे हक़

तालीफ़:

शेख़े तरीकत मेहबुब उल औलिया

अलहाज सयैद मुहम्मद तारिक़ अली

नाशिर:ख़ानकाहे हैदरी देहली

तफसिलात

नाम किताब : पैग़ामे हक़

मुसन्निफ : शेख़े तरीकत अलहाज सयैद मुहम्मद तारिक़ अली

हिन्दी तरजुमा : बशारत अ़ली बरकाती

तरतीब : सयैद मुहम्मद जाबिर कादरी आमिरी

ज़ेरे क़यादत : सयैद शाह सरदार अहमद सज्जादा नशीन खानकाहे हैदरी बनारस

तसदीक़: सयैद मुहम्मद ज़हीन क़ादरी
सयैद मुहम्मद वसीम क़ादरी
हाफिज़ मुहम्मद फिरोज़ लतीफी

इमदाद: सयैद मुहम्मद ऐजाज़ अ़ली
मुहम्मद वसीम बरकाती
वली मुहम्मद लतीफी
ज़ेनुल आबिदीन अनसारी

टायपिंग: अब्दुल समद कादरी
अनस बरकाती

तादाद: 1100

सनइशाअत: 2016

फोन न; 9136816672
9968423172

मिलने का पता: **मदरसा शहीदे आज़म**
(गली नं. ३, बजरंग बली मौहल्ला, दिल्ली-९३
मदरसा हैदरी शहीदे आज़म
(गली नं. २, कलयान, दिल्ली-९३)
फोन : 9136816672, 9968423172

अर्ज़ें मुरत्तिब

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए और बेहद दरूद सलाम हो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम पर जिन्होने हक़ का पैग़ाम दिया' इस किताब का मकसद किसी इसलामी भाई को ज़लील करना या नीचा दिखाना नही है. इस किताब में फकत इतना है कि जिन अहले सुन्नत के अकीदे को कुछ एतराज़ करने वाले हज़रात कुफर और शिर्क बोलते हैं' उन्ही के उल्मा उन मसलों में क्या जवाब देते हैं. जो अकीदे अहले सुन्नत के हैं यही अकीदे हमेशा से ही अहले इसलाम में रहे हैं. तो इन हज़रात से गुज़ारिश है कि तआस्सुब और बाज़ को दो करते हुए जो अकाइद किसी के नज़दीक गलत नहीं हैं उन्हें लाइल्मी का चश्मा हटा कर अपने दिल पर हाथ रख कर पैंग़ामे हक़ को पढ़ें और अपना अकीदा कम से कम इस चीज़ पर रखें कि यह सारे अकीदे गलत नहीं हैं. बल्कि उनके इमाम से भी साबित हो रहे हैं' अल्लाह हमें हक़ के पैंग़ाम पर अमल करने की तोफीक व रफीक अ़ता फरमाए: 'आमीन'

नोट; एतराज़ करने वालो से गुज़ारिश है कि अगर इस किताब के मुताबिक अपने अकीदे कर लिए तो उम्मत में इख्तिलाफ खत्म हो जाएगा. इस किताब में सारे हवाले एतराज़ करने वालो के बडे इमामो की किताबो से दिये गये हैं.अहले सुन्नत तो इसी अकीदे पर हैं' एतराज़ करने वालो से गुज़ारिश है कि इस अकीदे पर आएं' ये अकीदा हमेशा से मुसलमानों का रहा है.

अगर अहले सुन्नत के इन अक़ाइद के हवाले कुरआन व हदीस़ से चाहिये तो "जाअल हक़" पढ़े ये किताब हिन्दी और उर्दू दोनों ज़बानों में मौजूद है.

सय्यैद मोहम्मद जाबिर कादरी आमिटी

क़ब्र में शिजरा रखना

अहले सुन्नत का अकीदा है कि क़ब्र में शिजरा रखना बाइसे खेर है लेकिन एतराज़ करने वाले उसे ना जाइज़ कहते है और तरह तरह के सवाल कर के अवाम को परेशान करते हैं.

इस के जवाज़ की दलील उन्ही की किताब से मुलाहिज़ा फरमाएं;

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना आशिक ईलाही साहब अपनी किताब तज़किरातुर-रशीद हिस्सा दोम के सफह न; 363 पर लिखते हैं कि एक बार मौलाना अशरफ अली थानवी ने रशीद गंगोही से दरयाफ़त किया कि क़ब्र में शिजरा रखना जाइज़ है या नही और अगर जाइज़ है तो किया फायदा भी पहूंचता है? गंगोही साहब ने कहा हां जाइज़ भी है और फ़ायदा भी पहूंचता है.

फायदा: क़ब्र में शिजरा रखना जाइज़ है.

अल्लाह तआ़ला की अ़ता से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम अ़ता फरमाते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम से मांगना शिर्क नहीं.

अहले सुन्नत का अकीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम' अल्लाह तआला की अता से हर उस उम्मती की मदद करते हैं जो हुज़ुर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम को पुकारता है कुछ ऐतराज़ करने वाले अहले सुन्नत के इस अकीदे को शिर्क बोलते हैं अहले सुन्नत का ये अकीदा हक़ है एतराज़ करने वालो की ही किताब से दलील पेश कर रहे हैं मुलाहिज़ा फरमाएं;

दलील न;1 अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द;1 फज़ाइले दरूद शरीफ के सफह न;1057 पर वाक्या नकल करते हैं; हज़रत सुफयान सूरी फरमाते हैं मैं तवाफ कर रहा था मैंने एक आदमी को देखा वो हर क़दम पर दरूद ही पढ़ता जब मैंने उससे पुछा उसने कहा मेरे वालिद हज को

जा रहे थे अचानक उनका इन्तिकाल हो गया और उनका मुंह काला हो गया मैंने उनका मुंह चादर से ढक दिया इतने में मुझे नींद आ गयी ख्वाब में क्या देखता हूं एक बुज़ूर्ग मेरी तरफ आ रहे हैं मेरे बाप के मुंह से चादर हटाई और हाथ फेरा तो चेहरा सफेद हो गया वो जाने लगे तो मैंने उनका दामन पकड़ लिया और कहा अल्लाह पाक आप पर रहम करे आप कौन हैं. बुज़ूर्ग ने फरमाया मैं तेरा नबी सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम हूं तेरा बाप बडा गुनहगार था लेकिन मुझ पर कसरत से दरूद पढ़ता था. जब उस पर ये मुसीबत आई तो मैं उसकी फरियाद को पहुंचा और मैं हर उस उम्मती की फरियाद को पहुंचता हूं जो मुझ पर हर वक्त दरूद पढ़ता है.

इस वाक्ये से निम्नलिखित अकीदे साबित होते हैं;

1.**अकीदा:**इस वाक्ये से साबित हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम हर उस उम्मती की मदद के लिए तशरीफ लाते हैं जिसकी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम मदद करना चाहें. और सिर्फ यही नही उम्मती के पास तशरीफ भी ले जाते हैं. यही अहले सुन्नत का अकीदा है.

2.**अकीदा:**हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम को इल्म है कि आप का उम्मती परेशानी के आलम में है इससे इल्मे ग़ैब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम भी साबित होता है.

दलील न:2

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:2 फज़ाइले हज के सफह न:952 पर एक वाक्या नकल करते हैं कि मदीना मुनव्वरा में एक सय्यैदा ख़ातुन रहती थीं और बाज़ ख़ुद्दाम उनको सताया करते थे वो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम की मज़ारे अकदस पर फरियाद ले कर हाज़िर हुई कुछ दिन बाद वो ख़ुद्दाम

मर गये.

1.**फायदा:**हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के ज़ाहिरी विसाल के बाद एक सय्यैदा ख़ातुन का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम के मज़ार पाक पर जा कर फरियाद करती हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम का मदद फरमाना भी साबित होता है.

2.**फायदा:**परेशानी के आलम में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम की कब्र अनवर पर जा कर फरियाद करना मुसलमानों का ये तरीका हमेशा से रहा है

दलील न:3 अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:2 फज़ाइले हज के सफह न:953 पर एक हदीस़ नक्ल करते हैं कि एक बार मदीना मुनव्वरा में कहत यानी सुखा पड़ा एक सहाबी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम की कब्र अनवर पर हाज़िर हुए और कहा या रसुल्ललाह सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम! आप की उम्मत हलाक हो रही है. अल्लाह तआला से बारिश मांग लिजिए. उन्होने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम की ख्वाब में ज़ियारत की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम ने फरमाया बारिश होगी और उमर को मेरा सलाम कह देना.

1.**फायदा:**बारिश न होने पर सहाबा-ए-कराम का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम की कब्र अनवर पर जाकर दुआए मांगना। सहाबा-ए-कराम का ये अ़मल बता रहा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम की कब्रे अनवर पर हाज़िर हो कर मदद मांगना जाइज़ है.

2.**फायदा:**सहाबा-ए-कराम का ये अ़मल साबित करता है कि अल्लाह तआला की अता से नबी पाक सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम को इख्तियार हासिल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम बारिश अ़ता कर सकते हैं।

3.**फायदा:**एक बात और काबिले ग़ौर ये है कि

सहाबा-ए-कराम रिद्वानुल्लाही तआला अलेहि अजमईन ने अल्लाह तआला से दुआ करने के बजाए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के रोज़े पाक पर हाज़िर हो कर अपनी परेशानी बयान की क्योंकि सहाबा-ए-कराम का अकीदा है कि देता अल्लाह तआला ही है. बांटते हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम हैं.

दलील न:4 अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:1 फज़ाइल दरूद शरीफ के सफह न:1075 पर अशआर रिवायत करते हैं उन अशआर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम से मदद मांगी गयी है जबकि एतराज़ करने वालो का इजमाई मसला है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम को मदद के लिए पुकारना शिर्क है:

आप की फिराक ज़र्रा-ज़र्रा दम तोड़ रहा है या रसुल्ल्लाह सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम निगाहें करम फरमाए ऐ ख्वातिमुररसूल रहम फरमाएं.

इस शेअर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम से करम की भीक मांगी गयी है

आजिज़ो की दस्तगीरी बेकसो की मदद फरमाएं

इस शेर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम से मदद मांगी गयी है

या रसुल्ल्लाह सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम अगर आप के करम की मदद शामिले हाल ना होगी तो हम से कोई काम अंजाम न हो सकेगा.

इस शेर में कहा गया है कि या रसुल्ल्लाह सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम अगर आपकी मदद न मिली तो हमारे काम अंजाम तक नहीं पहुंच सकते.

फायदा: इन सब अशआर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम से मदद मांगी गयी है. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम अल्लाह तआला की अता से मदद फरमाते हैं.

दलील न:5

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना अशरफ थानवी साहब अपनी किताब नशरुत-तीब के सफह न:172 पर क़सीदा लिखते हैं कसीदे का खुलासा ये है कि मैं कसम खाकर कहता हूं कि जो परेशान हाल कोई उम्मती हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के रोज़े अनवर पर जा कर अपना हाल अर्ज़ करे तो उसकी परेशानी दूर हुई.

मुरीद करने की दलील

मुसलमान हमेशा से रूहानी तरबियत के लिए बुज़ुर्गाने दीन के सिलसिलो में मुरीद होते आए हैं. एतराज़ करने वाले लोग पीरी मुरीदी को ना जाइज़ कहते हैं जबकि गंगोही साहब कादरी सिलसिले में मुरीद करते थे. दलील मुलाहिज़ा फरमाएं:

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना आशिक ईलाही साहब अपनी किताब तज़किरातुर-रशीद हिस्सा दोम सफहा न:137 से 146 तक गंगोही साहब के उन सिलसिलों का तफसीलन ज़िक्र करते हैं जिनमे वो मुरीद करते थे जैसे कादरी नक्शबंदी चिश्ती सोहरवर्दी वगैरा.

फायदा: ये चारो सिलसिले हमेशा से अहले सुन्नत में रहे हैं और आज भी है.

उलमाऐ देवबन्द की किताबों से ये भी साबित होता है कि मुरीद होने की वजह से खातमा अच्छा होता है दलील मुलाहिज़ा फरमाएं:

अशरफुस सवानह जिलद:1 सफह न:142 पर तहरीर हैं कि हज़रत थानवी के मुतवसलीन के हुसने खातमे के बकसरत वाकयात हैं जिन से मकबुलियत व बरकत सिलसिले ज़ाहिर होते है. चुनांचे खुद हज़रत वाला फरमाया करते थे कि हज़रत हाजी साहब के सिलसिले की ये बरकत है कि जो बिलावास्ता या बवासता हज़रत से बेअत हो इसका बि फदली तआला खातमा तो बहुत अच्छा होता है.

हाजी इमदादुल्लाह साहब खुद भी सिलसिले कादरी चिशती नक्शबंदी सौहरवर्दी में मुरीद करते थे.

हज़रत शाह अब्दुल कादिर को गोसुलसकलेन दोनों आलम का मददगार कहने की दलील

अहले सुन्नत का अकीदा है कि अल्लाह तआला की अता से गोसे़ आज़म शेख अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलेह गोसुलसकलेन दोनो आलम के मददगार हैं. हमारे इस अकीदे की दलील एतराज़ करने वालों की किताब से मुलाहिज़ा फरमाएंः

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना आशिक ईलाही साहब अपनी किताब तज़किरातुर-रशीद हिस्सा दोम के सफह नः141पर गोसे आज़म शेख अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलेह को गोसुलसकलेन यानी दोनों आलम का मददगार लिखते हैं.

पीर बख्श' हुसैन बख्श' और फरीद बख्श' वगेरा नाम रखने की दलील

एतराज़ करने वाले कहते हैं कि जिसने हुसैन बख्श' नबी बख्श नाम रखा तो एसा नाम रखने वाला मुशरिक यानी काफिर है. और अहले सुन्नत का अकीदा है कि ऐसे नाम रखना बिलाशुबाह जाइज़ है. पहले सब मुसलमानों में ऐसे नाम पाए जाते थे. खुद **गंगोही** साहब के दादा और नाना के नाम बतोर दलील मुलाहिज़ा फरमाएंः

अकाबिर उल्माऐ देवबन्द मौलाना आशिक ईलाही साहब अपनी किताब तज़किरातुर-रशीद हिस्साः1 सफह नः32पर **गंगोही** साहब का नसब नामा लिखते हैं कि नाना का नाम फरीद बख्श है और दादा का नाम पीर बख्श है.

फायदाःगंगोही साहब के दादा और नाना के नाम बता रहे हैं कि वो किस अकीदे के थे.

आला हज़रत कहने के एतराज़ का जवाब

कुछ एतराज़ करने वाले हज़रात इमाम अहमद रज़ा खान रहमतुल्लाह अलेह को आला हज़रत कहने पर एतराज़

करते हैं जबकि अकाबिर उल्माऐ देवबन्द मौलाना आशिक ईलाही अपनी किताब तज़किरातुर-रशीद में अकाबिर उलमाऐ देवबन्द के पीर हाजी इमदादुल्लाह रहमतुल्लाह अलेह को अनदाज़न 70 बार आला हज़रत लिखा है.

रशीद गंगोही देवबनदियों के गौसे़ आज़म हैं.

अहले सुन्नत हज़रत पिराने पीर शेख अब्दुल कादिर जिलानी को गोसे आज़म कहते हैं.तो देवबन्दी हज़रात शिर्क बोलते हैं. जबकिःअकाबिर उलमाये देवबन्द मौलाना आशिक ईलाही अपनी किताब तज़किरातुर-रशीद हिस्साः1 के सफह नः17पर **गंगोही** सहाब को **गौसे** आज़म लिखते हैं.

जश्ने ईद मिलादुन्नबी मनाने का जवाज़

अहले इस्लाम हमेशा से हुजुर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की विलादत की खुशी मनाते रहे हैं जश्ने ईद मिलादुन्नबी की खुशी मनाने पर दलील अकाबिर उलमाऐ देवबन्द की किताब से मुलाहिज़ा फरमाएंः

देवबन्दी मौलवी अब्दुल हयी साहब अपनी किताब फतावा अब्दुल हयी के सफह नः95 पर फरमाते हैं कि सरवरे अंबिया की विलादत का ज़िक्र जो लाखो बरकतो और मुसर्रतो का सबब है.अबूलहब की बांदी जो बाद में ईमान ले आई थीं सूएबा रदी अल्लाहु अनहा जब खबर विलादत लेकर जाती हैं तो वो खुशी से सरशार हो कर उस को आज़ाद कर देता है उस के मरने के बाद लोगो ने ख्वाब में उसका हाल पूछा.अबूलहब जवाब में कहता हैं कि मौत के दिन से बराबर अज़ाब में मुबतला हूं मगर पीर की रात में हज़रत सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की विलादत की खुशी होने की वजह से अज़ाब में तखफीफ यानी कमी हो जाती है बस जबकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम की विलादत की खुशी से अबूलहब जैसे बदबख्त के अज़ाब में तखफीफ हो सकती है तो अगर आप सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम का एक उम्मती जो विलादत से खुश हो कर

अपनी मुहब्बत का इज़हार करता है तो क्यों आला रूतबे पर न पहूंचेगा.

फायदा: मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की विलादत की खुशी मनाना आला रूतबे पर पहूंचने का बेहतरीन अमल है.

किब्ला व काबा व सयैदी और तरीकत का मुरब्बी कहने की दलील

तमाम मुसलमानों का इस पर अमल रहा है कि उलमाऔ सूफी बुज़ूर्गों के नाम के आगे किब्ला व काबा व सयैदी बतौर ताज़ीम लिखते हैं.जबकि एतराज़ करने वालो के उल्माऔ की किताबों से साबित है कि उल्माऔ बुज़ूर्गों के नाम के आगे किब्ला व काबा व सयैदी लिखना जाइज़ है. दलील मुलाहिज़ा फरमाएं:

अशरफुस-सवान्ह जिल्द:4 सफह न:181 पर अशरफ थानवी साहब का नाम कुछ इस तरह लिखा है किब्ला व काबा व सयैदी मौलाना अशरफ थानवी और तरीकत का मुरब्बी.

फायदा:इस दलील से साबित होता है कि बुज़ूर्ग उलमाओं के नाम के आगे ताज़ीम किब्ला व काबा व सयैदी लिखना जाइज़ है.

मौला लिखने की दलील

एतराज़ करने वाले हज़रात. हज़रत अ़ली को मौला अली कहने को शिर्क कहते हैं. मौलाना अशरफ थानवी साहब के आगे मौला लिखा है दलील मुलाहिज़ा फरमाएं:

अरवाहे सिलासा के सफह न:14 पर अशरफ थानवी साहब का नाम कुछ इस तरह लिखा है हज़रत किब्ला सयैदी मौलाइ हकीमुल-उम्मत अशरफ थानवी.

अल्लाह तआला के हुकूम से अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम दुनिया में कहीं भी तशरीफ ले जा सकते हैं.

अहले सुन्नत का अकीदा है कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम बादे विसाल जहां चाहें तशरीफ ले जा सकते हैं. और मदद भी फरमाते हैं. दलील हम अकाबिर उलमाऐ देवबन्द की किताब से पेश कर रहे हैं मुलाहिज़ा फरमाऐ:

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना आशिक ईलाही साहब अपनी किताब अहवाले बरज़ख के सफह न:45से 46 पर एक हदीस़ रिवायत करते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रदी अल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि एक बार हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के साथ मक्के और मदीने के दरमियान सफ़र कर रहे थे. आप ने एक वादी के मुतालिक दरयाफत किया यह कौन-सी वादी है? हाज़रीन ने जवाब दिया कि यह वादी-ए-अरज़क है. आप ने इरशाद फरमाया कि गोया मैं देख रहा हूं मूसा अलेहिस्सलाम को उन का रंग और बालो की कैफियत कुछ बयान फरमाई और फरमाया वो अपने रब के नाम का तलबिया ज़ोर ज़ोर से पढ़ते हुए उस वादी से गुज़र रहे हैं.

फिर दुसरी हदीस़ पेश करते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रदीअल्लाह अन्हु फरमाते हैं कि हम आगे चले हत्ता के एक वादी आई. आप ने उस वादी के मुताल्लिक दरयाफत किया कि यह कौन-सी वादी है? हाज़रीन ने जवाब दिया के यह हर्शी है. आप सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम ने फरमाया गोया मैं यूनुस अलेहिसलाम को देख रहा हूं वो सुर्ख उंटनी पर सवार हैं उनके जिस्म पर उन का जुब्बा है और उनकी उंटनी की लगाम दरख्त की छाल की है तलबिया पढ़ते हुऐ उस वादी से गुज़र रहे हैं.

मौलाना आशिक ईलाही साहब ये हदीसें पेश करने के बाद आगे लिखते हैं. इस मुबारक हदीस़ से साबित होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम ने मूसा और यूनुस को हालते बेदारी में तलबिया पढ़ते देखा. मालूम

हुआ कि अंबियाऐ-कराम अलेहिम सलातु वस्सलाम की हयाते बरज़ख्या इस कदर अकमल है कि इस दुनिया में तशरीफ ला सकते हैं मनासिक हज अदा कर सकते हैं और उनका हाल देखा जाना भी मुमकिन है बाज़ बुजुर्गों से मंकूल है कि उन्होने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम को बेदारी में देखा है और ये झूठ नही है.

फायदा: इस दलील से स़ाबित होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम जहां चाहें तशरीफ ला सकते हैं.

खड़े हो कर सलाम पढ़ना

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:2 फज़ाइले हज के सफह न:936 पर एक हदीस़ तहरीर करते हैं कि हज़रत अबूहाज़िम से एक शख्स ने आकर कहा मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम को ख्वाब में देखा है आप सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम ने फरमाया अबूहाज़िम से कह देना हमारे पास से गुज़रते हो तो खड़े होकर सलाम नही पढ़ते फिर आप जब भी वहां से गुज़रते खड़े हो कर सलाम पढ़ते.

अल्लाह वालो की मोहब्बत' खात्मा बिल खैर की निशानी है.

अहले सुन्नत का अकीदा है कि अल्लाह वालो की मोहब्बत खात्मा बिल खैर की निशानी है. दलील एतराज़ करने वालो की किताब से मुलाहिज़ा फरमाएं:

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना आशिक ईलाही साहब अपनी किताब तज़किरातुल-खलील के सफह न:500 पर लिखते हैं कि अल्लाह वालो की मोहब्बत दिल में हो तो इंशा अल्लाह खात्मा कभी खराब न होगा और दिल में अगर अल्लाह वालो से बुग्ज़ हो तो खात्मा खराब होने का आंदेशा है.

फायदा: इस दलील से साबित होता है कि औलिया

अल्लाह की मुहब्बत अगर दिल में होगी तो खात्मा ईमान पर होगा. और अगर औलिया अल्लाह की मुहब्बत दिल में न होगी तो खात्मा खराब होने का आंदेशा है.

नोट: एक बात और क़ाबिले तव्वजो है कि औलिया अल्लाह की मुहब्बत हक़ पर होने की पहचान है.

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम सारी मख्लूक़ के सरदार हैं

अकाबिर उल्माऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:1 फज़ाइले दरूद शरीफ के सफह न: 964 पर नकल करते हैं कि जुमे का दिन तमाम दिनों का सरदार है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की ज़ात पाक सारी मख्लूक़ की सरदार है.

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के रोज़ाए अनवर पर सलातुसलाम पढ़ना और मुराकबा करना.

अहले सुन्नत का मामूल रहा है कि बुज़ूरगाने दीन के रूहानी फेज़ के लिए मुराकबा किया जाता है. देवबन्दी किताब में ये बात दर्ज है कि गंगोही साहब खुद मुराकबा करते थे.दलील मुलाहिज़ा फरमाएं:

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना आशिक ईलाही साहब अपनी किताब तज़किरातुर-रशीद जिलद:1 के सफह न:334 पर लिखते हैं कि गंगोही हुज़ुर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम के रोज़े अतहर पर हाज़िर हुए और सलातुसलाम पढ़ा और मुराकबा में बैठ गये.

फायदा: इस दलील से साबित होता है कि बाद विसाल औलिया अल्लाह अपना फेज़ दे सकते हैं.

नोट: मज़ार पर जा कर साहिब-ए-मज़ार के फेज़ लेने की नियत से बैठना मुराकबा कहलाता है ताके मज़ार वाले से फेज़ हासिल हो.

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम पर कसरत से दरूद पाक पढ़ना अहले सुन्नत यानी सुन्नी होने की

अलामत है.

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:1 फज़ाइल दरूद शरीफ के सफह न:923 पर एक कोल नकल करते हैं कि अल्लामा सखावी ने इमाम ज़ेनुल आबिदीन रदीअल्लाहु अनहु से नकल किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम पर कसरत से दरूद भेजना अहले सुन्नत की पहचान है.

फायदा:अहले सुन्नत का कसरत से दरूदो सलाम पढना हक़ पर होने की दलील है जो अहले सुन्नत में पाई जाती है.

बुज़ूर्गों की कब्रो पर छत व गुंबद बनवाना.

अशरफ थानवी साहब अपनी किताब नशरूत-तीब के सफह न:217 पर एक हदीस़ तहरीर करते हैं कि मदीना मुनव्वरा में एक बार सख्त कहत यानी सूखा हुआ. लोगो ने हज़रत आईशा रदीअल्लाहु अन्हु से शिकायत की; आपने फरमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की कब्रे मुबारक को देख कर उसके मुकाबिल आसमान की तरफ उसमें एक मुंफिज़ कर दो यहां तक कि और आसमान के दरमियान हिजाब न रहे; चुनांचे ऐसा ही किया गया तो बहुत ज़ोर की बारिश हुई.

फायदा: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की कब्रे मुबारक के उपर छत बनी थी; क्योंकि खोली वही चीज़ जाती है जो बन्द हो. मालूम चला कि कब्र पर छत डालना सहाबा-ए-कराम की सुन्नत है.

कब्र में इबतदन यानी शुरू में सवाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम का होगा.

कब्र' आखिरत की पहली मंज़िल है जो इस में कामयाब हो गया उसकी आगे की मंज़िल आसान हो गयी. आमतौर पर हम ये बोलते हैं कि नमाज़ रोज़े की पाबंदी करो कब्र

में आसानी होगी जबकि कब्र में सवाल नमाज़'रोज़े का नहीं होगा बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के बारे में होगा.नमाज़ का सवाल तो हश्र के मैदान में होगा! कब्र के सवाल का जवाब तो वही दे सकेगा जिसके दिल में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की पक्की मोहब्बत होगी. दलील मुलाहिज़ा फरमाएं:

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:1 फज़ाइले दरूद शरीफ के सफह न:931 पर एक हदीस़ लिखते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम ने फरमाया मुझ पर कसरत से दरूद पाक पढ़ो' इस लिए कि कब्र में इबतदन यानी शुरू में तुम से मेरे बारे में सवाल होगा.

फायदा: इस दलील से साबित होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की मुहब्बत असल ईमान है इसलिए कब्र में इबतदन यानी शुरू में सवाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के बारे में होगा.क्योंकि कब्र में मोमिन का ईमान परखा जाएगा और असल ईमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की मुहब्बत ही हैं.

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम न होते तो कुछ भी न होता और वसीला हक़ है

अहले सुन्नत का ये अकीदा है कि सारी कायनात अल्लाह तआला ने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम के लिए बनाई है. दलील मुलाहिज़ा फरमाएं:

अकाबिर उल्माऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:2 फज़ाइले दरूद शरीफ के सफह न:928 पर एक हदीस़ रिवायत करते हैं कि जब आदम अलेहिस्सलाम दुनिया में भेजे गये तो हर वक्त रोते रहे एक दिन आपने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के सदके में

तुझसे मग़फिरत चाहता हूं. वही नाज़िल हुअी कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम को तुमने कैसे पहचाना तो आदम अलेहीस्सलाम ने अर्ज़ किया जब तुने मुझे पैदा किया था तो मैंने अर्श पर लिखा देखा 'ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर-रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम' तो मैं समझ गया था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम से बढ़ कर कोई उंची हसती नहीं हैं. जिनका नाम तूने अपने नाम के साथ रखा' वही आई अगर वो न होते तो तुम भी पैदा न किये जाते.

1.**फायदा:** अल्लाह तआला ने ये दुनिया हुजूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की खातिर बनाई है' अगर हुजूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम को पैदा करना मकसूद न होता तो अल्लाह तआला कुल कायनात को भी पैदा नहीं करता.

2.**फायदा:** हुजूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के वसीले से आदम अलेहिस्सलाम की दुआ कुबूल हुई.

गुमराह न होने की ज़मानत अहले बैत की मुहब्बत है.

अशरफ थानवी साहब अपनी किताब नशरुत-तीब के सफह न:227 पर एक हदीस़ तहरीर करते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं तुम में दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूं एक किताबुल्लाह और दुसरी अहले बैत यानी हज़रत अली' हज़रत फातमा' हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रिद्वानुल्लाहि अलेहिम अजमईन

फायदा: अहले सुन्नत' अहले बैत की मुहब्बत के क़ाइल है इसका अंदाज़ा मुहर्रम के महीने में लग जाता है' अहले बैत की मुहब्बत गुमराह न होने की ज़मानत है और कुछ लोग हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन से हमारी अकीदत देख कर शिया होने का इल्ज़ाम लगाते हैं जबकि हक़ पर होने की अलामत ही ये है कि हज़रत अली'

हज़रत फातमा हज़रत हसन और हज़रत हुसैन से मुहब्बत की जाए.

करामत हक़ है और ओलिया अल्लाह की करामत मानना अहले सुन्नत व जमाअत होने की अलामत है.

दलील मुलाहिज़ा फरमाएं:

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:1 फज़ाइले दरूद शरीफ के सफह न:1067 पर लिखते हैं कि शाह वली अल्लाह के एक वाकिया की शरह में फरमाते हें' अहले सुन्नत व जमाअत का अकीदा है कि करामत औलिया हक़ है.

फायदा: हम अहले सुन्नत का अकीदा है कि औलिया अल्लाह' अल्लाह की अता से करामत करते हैं जैसे अल्लाह की अता से मुर्दे ज़िन्दा करना और अल्लाह की अता से औलादें अता करना.

हुजूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम आदम अलेहिस्सलाम की पैदाइश से पहले भी नबी थे.

एतराज़ करने वालो का अकीदा यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम को नबुव्वत 40 साल की उम्र में मिली.

अहले सुन्नत का अकीदा है कि हुजुर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम को अल्लाह पाक ने आदम अलेहिस्सलाम से पहले भी नबी बना दिया था' दलील मुलाहिज़ा फरमाये:

अशरफ थानवी साहब अपनी किताब नशरुत-तीब के सफह न:6 पर एक हदीस़ तहरीर करते हैं: सहाबा ने अर्ज़ किया या रसुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम आप के लिए नबुव्वत किस वक्त साबित हो चुकी थी. आपने फरमाया: जिस वक्त आदम अलेहिस्सलाम का जिस्म बना भी न था उस वक्त भी मैं नबी था.

फायदा: आप सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम उस

वक्त से नबी हैं जब वक्त भी न था. इस हदीस़ में यह ज़िक्र है कि आप सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम' आदम अलेहिस्सलाम की पैदाइश से पहले भी नबी थे' आप सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम ने यह नही फरमाया कि मै उस वक्त नबी बना था बल्कि ये फरमाया कि उस वक्त भी मैं नबी था.

अल्लाह वालो के मज़ार पर दुआएं कुबूल होती हैं.

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्दः1 फज़ाइले दरूद शरीफ के सफह नः1048 पर एक वाकिया नकल करते हैं कि एक ताजिर था उसके इन्तिकाल के बाद उस के दौनो बेटो ने आधा-आधा माल तकसीम कर लिया' लेकिन तरके में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के तीन बाल शरीफ भी थे' एक एक दोनों ने ले लिये' तीसरे बाल के मुताल्लिक बड़े भाई ने कहा कि उसको भी आधा-आधा करलें छोटे भाई ने कहा हरगिज़ नहीं खुदा की कसम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम का बाल मुबारक नहीं काटा जा सकता. बड़े भाई ने कहा कि क्या तू इस पर राज़ी है कि ये तीनों बाल मुबारक तू लेले और यह सारा माल मेरे हिस्से में लगादे छोटा भाई खुशी से राज़ी हो गया. बड़े भाई ने सारा माल ले लिया और छोटे भाई ने तीनों बाल मुबारक ले लिए वो उनको अपनी जेब में हर वक्त रखता और बार बार निकालता उनकी ज़ियारत करता और दरूद शरीफ पढ़ता थोड़ा ही ज़माना गुज़रा था कि बड़े भाई का सारा माल खत्म हो गया और छोटा भाई बहुत ज़्यादा मालदार हो गया. जब उस छोटे भाई की वफात हुई तो किसी शख्स ने ख्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की ज़ियारत कीः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जिस किसी को कोई ज़रूरत हो तो उनकी कब्र के पास बैठ कर अल्लाह से दुआएं किया करें.

फायदाः इस वाकिया से साबित होता है कि अल्लाह वालो की कब्र पर दुआएं कुबूल होती हैं. यही अहले सुन्नत का अकीदा है कि अल्लाह वालो के मज़ार पर दुआएं कुबूल होती हैं.

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम नूर भी हैं.

अहले सुन्नत का अकीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम नूर भी हैं और अफज़लुल-बशर भी हैं. लेकिन एतराज़ करने वाले हज़रात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के नूर होने के काईल नही हैं' हम दलील थानवी साहब की किताब से पेश कर रहे हैं' कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम नूर भी हैं दलील मुलाहिज़ा फरमाएंः

1.दलीलः अशरफ थानवी साहब अपनी किताब नशरुत-तीब के सफह नः5 पर एक हदीस़ तहरीर करते हैंः हज़रत जाबिर रदीअल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि या रसुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम सबसे पहले अल्लाह तआला ने कौन-सी चीज़ पैदा की. आप ने फरमाया अल्लाह ने तमाम अशिया से पहले तेरे नबी का नूर अपने नूर के फज़लो करम से पैदा फरमाया.

फायदाः हज़रत जाबिर रदी अल्लाहुअन्हु के अर्ज़ करने पर आका सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम ने फरमाया कि सबसे पहले अल्लाह ने तेरे नबी के नूर को पैदा फरमाया' तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की असल नूर है बशरियत हिजाब था.

2.दलीलः अकाबिर उल्माऐ देवबन्द मौलाना ज़करया अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्दः1 फज़ाइले दरूद शरीफ के सफह नः1080 पर मौलाना नानोतवी के अशआर पेश करते हैं

1-कहां वो रुतबा कहां अकले नारसा अपनी
कहां वो नूरे खुदा और कहां ये दीदाए ज़ार

2.चिराग गुल है इस नूर के आगे
ज़ुबान का मुंह नही जो करे मदह में करे गुफतार
3.रहा जमाल पे तेरे हिजाब बशरियत
न जाना कौन है कुछ भी किसी ने जज़े सत्तार

फायदा: देवबन्दी मौलवी कासिम नानौतवी साहब के शेयर से साबित होता है कि हुज़ुर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम नूर भी हैं मौलवी कासिम नानौतवी ने हर शेयर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम को नूर कहा है.और देवबन्दी मुफती आज़म रशीद लुधयानवी अपनी किताब अहसनुल फतावा के सफह न:57 पर लिखते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम नूर भी हैं अफज़लूल बशर भी हैं.

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम नूर हैं और हुज़ूर का साया नही था.

अकाबिर उल्माऐ देवबन्द मौलाना गंगोही साहब अपनी किताब इमदादुस-सुलुक के सफह न: 201 पर कुछ यूं तहरीर करते हैं लफज़ बा लफज़ मुलाहिज़ा फरमाएं:
हक तआला ने अपने हबीब की शान में फरमाया है.
"कद जाअकुम मिनल्लाही नूरूव व किताबुम मूबीन"
तरजुमा: "बेशक आया तुम्हारे पास हकतआला की तरफ से नूर और वाज़ह किताब"
गंगोही साहब इस आयत के तहत में आगे लिखते हैं कि इस आयत में नूर से मुराद हबीबे खुदा की ज़ात है.
गंगोही साहब ने दूसरी आयत-ए-करीमा में पेश करते हैं कि;
या अययुहन्नबीय इन्ना अरसलनाका शाहिदव व मुबश्शिरव व नज़ीरव वदाइया इलल्लाह बिइज़निहि व सिराजव मुनीरा.
तरजुमा; ए नबी सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम हमने तुमको नूर और मुज़दा सुनाने वाला और डर सुनाने वाला और अल्लाह की तरफ बुलाने वाला और चिरागे

मुनीर बना कर भेजा है.
मुनीर रोशन करने वाले और दूसरो को नूर देने वाले को कहते हैं. पस अगर किसी दूसरे को रोशन करना इन्सान के लिए मुहाल होता तो ज़ात पाक सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम को भी ये कमाल हासिल न होता क्योंकि हुज़ूर भी तो औलादे आदम में से हैं. मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम ने अपनी ज़ात को इतना मुताहर बना लिया कि नूरे खालिस बन गये और हक़ तआला ने आप को नूर फरमाया और शोहरत से साबित है कि आप का साया न था और ज़ाहिर है कि नूर के इलावा हर जिस्म का साया ज़रूर होता है. इसी तरह आप ने अपने मुतबईन यानी सहाबा को इस कदर तज़किया और तसफिया बख्शा कि वो भी नूर बन गये चुनांचे उनकी करामत वगेरह की हिकायतो से किताबें पुर और इतनी मशहूर हैं कि नकल की हाजत नहीं.
फायदा: गंगोही साहब की इस तहरीर से निम्नलिखित बातें साबित होती हैं:
1.हुज़ूर अलेहिस्सलाम नूर हैं.
2.और हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने अपने मुतबईन 'सहाबा' को नूर बना दिया था.
3.हुज़ूर अलेहिस्सलाम का साया नही था.
फायदा: अहले सुन्नत का भी यही अकीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम नूर हैं.
हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की मोहब्बत ही अल्लाह की मोहब्बत की अलामत है.
अहले सुन्नत का ये अकीदा है कि अगर ये जानना है कि किस के दिल में अल्लाह की मोहब्बत है तो उसके दिल को हुज़ूर की मोहब्बत की कसोटी पर परखा जाएगा कि इसके दिल में हुज़ूर की मोहब्बत है या नहीं.इसी अकीदे के तहत देवबन्दी मौलवी अशरफ थानवी सहाब अपनी किताब नशरूत-तीब के सफह न:219 पर तहरीर

करते हैं कि ऐ आशिक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के इश्क में खूब तरक्की कर' और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के ज़िक्र से अपनी जुबान को मुअत्तर कर' किसी की परवाह मत कर क्योंकि अलामत अल्लाह की मोहब्बत की ये है कि उसके हबीब सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम से मोहब्बत की जाए.

फायदाः थानवी साहब के इस कोल से साबित होता है कि जिसके दिल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की मोहब्बत नहीं' उसके दिल में अल्लाह की मोहब्बत नहीं.

मज़ार पर फातिहा पढ़ने की दलील.

अशरफ थानवी साहब अपनी किताब अरवाह सलासा के सफह नः34 हिकायत नः13 में लिखते हैं कि मौलवी अब्दुल कययूम साहब फरमाते थे कि शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब का मामूल था कि शाह अब्दुर रहीम के मज़ारात पर साल भर में एक बार तशरीफ लेजाते' और वहां जा कर फातिहा और मसनवी शरीफ का वअज़ करते.

फायदाः इस दलील से साबित हुआ कि मज़ार पर फातिहा और कुरआन पढ़ना जाइज़ है.

वलियों की मुहब्बत से कुर्बे इलाही हासिल होती है.

अहले सुन्नत औलिया अल्लाह की मुहब्बत को अल्लाह के कुर्ब का ज़रिया समझते हैं.

मोलवी अशरफ थानवी साहब अपनी किताब अरवाह सिलासा के सफह नः7 जो ये चाहता है कि उसे खुदा की कुर्बत हासिल हो' तो उसको अल्लाह के वलियों की मुहब्बत इख्तियार करना चाहिये.

फायदाः अहले सुन्नत को औलिया अल्लाह से मुहब्बत है इस लिए मज़ार पर हाज़री देते हैं' अहले सुन्नत का मज़ारे पाक पर हाज़री देना औलिया अल्लाह की मुहब्बत है.

या रसुलल्लह सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम कहने का जवाज़.

अहले सुन्नत का अकीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम को दूर से या रसूलल्लाह पुकारना जाइज़ है' दलील एतराज़ करने वालों की किताब से मुलाहिज़ा फरमाएः

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्दः1 फज़ाइले दरूद शरीफ के सफह नः1055 पर एक दरूद शरीफ नकल करते हैं.

सल्लल्लाहु अलैका या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैका या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैका या मुहम्मद' आगे लिखा है हज़रत शिबली रहमतुल्लाह अलेह हर नमाज़ के बाद यही दरूद शरीफ पढ़ते थे.

फायदाः हज़रत शिबली रहमतुल्लाह अलेह का हर नमाज़ के बाद यही दरूद शरीफ पढ़ना ये बता रहा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेही व असलिहि वसल्लम को दूर से या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेही व आलिहि वसल्लम कहना जाइज़ है.

नोटः एतराज़ करने वालो का इजमाई अकीदा ये है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम को दूर या नज़दीक से या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम या रसूलल्लाह कहना शिर्क है.

औलिया अल्लाह को कब्र के अन्दर से बिमारो को शिफा देने का इख्तियार हासिल है.

मौलाना अशरफ थानवी साहब अपनी किताब अरवाह सलासा के सफह नः 251 पर हिकायत नः301 में लिखते हैं कि मौलवी मुओनुद्दीन साहब' मौलाना मुहम्मद याकूब साहब के सबसे बड़े साहब ज़ादे थे वो हज़रत मौलाना की एक करामत' जो बाद वफात वाकेय हुई' बयान फरमाते थे कि एक बार हमारे नानोते में जाड़ा बुखार की बहुत कसरत हुई' जो शख्स मौलाना की कब्र

से मिटटी ले जाकर जिस्म पर कहीं बांध लेता उसे आराम हो जाता' लोग कसरत से मिटटी ले जाने लगे' जब ही मैं मिटटी डलवाउं तब ही खत्म' कई बार मिटटी डलवा चुका' परेशान हो कर एक बार मौलाना की कब्र पर मैंने कहा आप की तो करामत हो गयी और हमारी मुसीबत हो गयी फिर कहा याद रखो कि अगर अब की बार कोई अच्छा हुआ तो हम मिटटी न डालेंगे ऐसे ही पड़े रहना' लोग तुम्हारे उपर जूता पहने ऐसे ही चढ़ेंगे' बस उसी दिन से फिर किसी को आराम न हुआ' जैसे शोहरत हासिल हुइ थी वैसे ही ये शोहरत हो गयी कि आराम नहीं होता' फिर लोगो ने मिटटी ले जाना बन्द कर दिया.

इस वाकेय से कई अहले सुन्नत के अकीदे साबित होते हैं.

1.फायदा: इस वाकेय से साबित होता है कि कब्र के अन्दर से मरने वाला सुनता है.

2.फायदा: कब्र की मिटटी से शिफा मिलती है.

3.फायदा: मरने के बाद बीमारी से शिफा देकर' शिफा रोक देने का इख्तियार.

खुलासा कलाम: हम अहले सुन्नत का भी तो यही अकीदा है कि अल्लाह की अता से औलिया अल्लाह के मज़ार से शिफा देते है' एतराज़ करने वाले हज़रात हमारे इस अकीदे को शिर्क बोलते है'

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम का रोज़ा-ए-अक्दस' हर शेय से अफज़ल है.

1.दलील: अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:1 फज़ाइले हज के सफह न:975 से 976 तक लफज़ बा लफज़ मुलाहिज़ा फरमाएं:

मदीना तैयबा की वो ज़मीन' जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के जिस्म मुबारक से मुत्तसिल लगी हुई है इस में उल्मा का इख्तिलाफ नही है वो बिल

इत्तिफाक़ सब उल्मा के नज़दीक सब जगहों से अफज़ल है इब्ने असाकर' काज़ी अयाज़ वगैरा हज़रात ने भी इस पर सारी उम्मत का इत्तिफाक और इजमाअ नकल किया है कि ये हिस्सा ज़मीन के काबे से भी अफज़ल है बल्कि काज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहअलेह ने लिखा है कि अर्शे आज़म से भी अफज़ल है.

2.दलील: अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:1 फज़ाइले हज के सफह न:976 पर लिखते हैं कि काबा शरीफ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के रोजाए अक्दस के सिवा दुनिया की हर जगह से अफज़ल है' अल्लाह की मख्लूक में हुज़ुर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम का रोज़ा सबसे अफज़ल है.

3.दलील: अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:1 फज़ाइले हज के सफह न:993 पर एक हदीस़ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम का इरशाद है जो जगह मेरे मकान यानी मेरी कब्र और मेरे मिंबर के दरमियान है' जन्नत के बागों में से एक बाग है इस हदीस़ की शरह में मौलाना ज़करया इमाम इब्ने हजर का कोल पेश करते हैं: हाफिज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलेह फतहुलबारी में फरमाते हैं कि इस हदीस से भी मदीना तैयबा का मक्का मुकर्रमा से अफज़ल होने पर इस्तदलाल किया गया है.

1.फायदा: फज़ाइले आमाल की इस इबारत से साबित होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम का रोज़ा पाक काबा और अर्शे आज़म से अफज़ल है और काबा व अर्शे आज़म कायनात की हर शय से अफज़ल है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम का रोज़ा मदीना में है तो मदीना मुनव्वरा मकका मुअज़्ज़म से अफज़ल है' यही अहले सुन्नत का अकीदा है.

2.फायदा: वाज़ह तौर पर साबित हुआ' मदीना मुनव्वरा मक्का मुअज़्ज़मा से अफ़ज़ल है. यही अकीदा अहले सुन्नत का है.

दुआ के वक्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के रोज़ाए अनवर की जानिब रूख करना चाहिये.

अकाबिर उल्माऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:2 फज़ाइले हज के सफह न: 927 पर लिखते हैं कि खलीफा अब्बासिया में से मंसूर अब्बासी ने हज़रत इमाम मालिक से दरयाफत किया कि दुआ के वक्त हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की तरफ चेहरा करूं या किब्ले की तरफ? तो हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलेह ने फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की तरफ से चेहरा क्यो हटाएं जबकि तेरा और तेरे वालिद आदम अलेहिस्सलाम का वसीला भी हुज़ूर ही हैं' हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की तरफ मुंह करके शिफाअत चाहो.

फायदा:अहले सुन्नत का अकीदा है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम का रोज़े पाक हर जगह से अफ़ज़ल है' तो काबे का भी काबा हुआ इस लिए इमाम मालिक ने दुआ में चेहरा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की तरफ से फेरने के लिए मना कर दिया.

हाजियों आओ शहन्शाह का रोज़ा देखो
काबा तो देख चुके काबे का काबा देखो

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के रोज़े पाक की ज़ियारत अफ़ज़लतरीन इबादत है

अहले सुन्नत का ये अकीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के रोज़े पाक की ज़ियारत अफ़ज़लतरीन इबादत है दलील मुलाहिज़ा फरमाएं:

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिलद:2 फज़ाइले हज के सफह न:897 पर लिखते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के रोज़ाए पाक की ज़ियारत अहमतरीन नेकियों में से है और अफ़ज़लतरीन इबादत है.

औलिया-ए-कराम के कुर्ब में दफ़न होना' नफा बख्श है.

अहले सुन्नत का अकीदा है कि औलिया अल्लाह के कुर्ब में दफ़न होना नफा बख्श है.दलील मुलाहिज़ा फरमाएं:
अशरफ थानवी अपनी किताब अरवाहे सलासा के सफह न:385 पर हिकायत न:453 में लिखते हैं कि मौलवी क़ासिम नानोतवी से किसी ने सवाल किया कि औलिया अल्लाह के मज़ार के पास अपनी कब्र बनवाएं' उससे क्या फायदा है? मौलवी क़ासिम नानौतवी ने जवाब दिया कि औलिया अल्लाह की कब्रो पर रहमत की हवाएं चलती हैं और आस पास के लोगो को भी लगती हैं रहमत के असरात सबको पहुंचते हैं.

औलिया अल्लाह बाद विसाल भी ज़िन्दा रहते हैं.

अहले सुन्नत का अकीदा है कि औलिया अल्लाह बाद विसाल भी ज़िन्दा रहते हैं.दलील मुलाहिज़ा फरमाएं:
अकाबिर उल्माऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:2 फज़ाइले हज के सफह न:1066 पर एक वाकेय नकल करते हैं कि एक बुज़ुर्ग फरमाते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा में था एक बार मैंने एक नौजवान की लाश देखी' जो निहायत खूबसूरत था मैं उसके चेहरे को देख ही रहा था' मरने वाले ने मुझ से कहा कि किया तुम्हे पता नहीं वलीअल्लाह मरते नही अगरचे ज़ाहिर में मर जाएं.

अकीदा इल्मे ग़ैब पर मुफ़सिल दलील

अहले सुन्नत का अकीदा है कि अल्लाह तआला ने अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम को इल्मे

ग़ैब अता फरमाया है और एतराज़ करने वाले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के इल्मे ग़ैब के मुनकिर हैं. इसलिए हमने इल्मे ग़ैब के दलाइल ज़्यादा लिये हैं

1.**दलील:** अशरफ थानवी साहब अपनी किताब अरवाह सलासा के सफह न:277 पर हिकायत न:350 में लिखते हैं कि मौलवी शाह अब्दुर रहीम रायपुरी का कल्ब बड़ा नूरानी था' मैं उनके पास बैठने से डरता था कि कहीं मेरे ऐब ज़ाहिर न हो जाएं.

फायदा: थानवी साहब का अकीदा ज़ाहिर है कि मौलवी शाह अब्दुर रहीम रायपूरी का क़ल्ब बड़ा नूरानी था' मैं उनके पास बैठने से डरता था कि कहीं मेरे ऐब ज़ाहिर न हो जाएं और किसी के ऐब का ज़ाहिर हो जाना यह ग़ैब की बात है यानी वो दिल की बात जान लेते थे दिल की बात जान लेना इल्मे ग़ैब कहलाता है.

2.**दलील:** अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना आशिक ईलाही साहब अपनी किताब तज़किरातुर-रशीद जिल्द दोम सफह न:390 पर लिखते हैं कि किसी ने ख्वाब देखा कि कई बुज़ुर्ग कह रहे हैं कि रशीद गंगोही को हक़ तआला ने वो इल्म दिया है कि कोई हाज़िर होने वाला अस्सलामुअलेकुम कहता है तो गंगोही इसके इरादे से वाकिफ हो जाते थे.

फायदा: दिल के इरादे से वाकिफ हो जाने को इल्मे ग़ैब कहते हैं यहां तो गंगोही जी तक का इल्मे ग़ैब साबित हो रहा है.

इख्तियार' इल्मे ग़ैब' हाज़िर व नाज़िर

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना आशिक ईलाही साहब अपनी किताब तज़किरातुर-रशीद हिस्सा दोम के सफह न:323 से 324 पर एक मज्ज़ूब के ताअ़लुक से एक वाकिया लिखते हैं कि हज़रत हाजी साहब शहीद जब अरब जा रहे थे' तो एक दिन जहाज़ में हज़रत के हाथ से लोटा छूट कर समुंद्र में गिर गया' ज़रा सी देर गुज़री थी कि

एक हाथ समुंदर में से लोटा थामे हुऐ निकला और हज़रत हाजी साहब के हांथ में पकड़ा कर गायब हो गया उधर लोहारी में उन मज्ज़ूब साहब ने हज़रत के खादिम से फरमाया कि' तुम्हारे हाजी के हाथ से लोटा छूट कर समुंद्र में गिर गया था मैंने उनको लोटा पकड़ाया' हज़रत के खादिम ने समझा कि बड़ी हांक रहे हैं' जब हज़रत हाजी साहब हज से फारिग़ हो कर वापस हुए तो किसी को मज्ज़ूब की बात याद आ गयी उन्होने हज़रत से अर्ज़ किया आपने फरमाया सच है बेशक ये वाकिया जहाज़ में पेश आया मगर उस वक्त वो हाथ मेरी शनाख्त में नहीं आया कि किसका है.

इस किताब के इस वाकेय से चन्द अहले सुन्नत के अकीदे साबित होते हैं मुलाहिज़ा फरमाएं:

1.**अकीदा:** इन मज्ज़ूब साहब को कैसे पता चला कि हाजी साहब का लोटा समुंद्र में गिर गया है' इस्से मज्ज़ूब साहब का इल्मे ग़ैब साबित होता है.

2.**अकीदा:** इस मज्ज़ूब ने कैसे लोटा उठा कर दे दिया' इससे हाज़िर नाज़िर और तसर्रुफ का अकीदा साबित होता है. एक जगह पर होते हुए दूसरी जगह पर अपनी कुदरत को ज़ाहिर करना तसर्रुफ कहलाता है.

खुलासा: जब मज्ज़ूब साहब दूर से देख रहे हैं कि लोटा गिर गया और बिना कहे दूर से उठा कर दे भी दिया' दूसरा पहलू अभी ग़ौर करें' हाजी साहब लोटा गिरने पर वहीं दूर से ये कहते या मज्ज़ूब साहब मदद करिये तो मज्ज़ूब साहब तब भी दूर से सुन भी लेते और लोटा उठा कर दे भी देते.

लेकिन अगर गौसे आज़म रदीअल्लाहु अन्हु से यही अकीदा रखे तो एतराज़ करने वाले हज़रात इसको शिर्क बोलते हैं. इस वाकेय से साबित होता है कि अल्लाह की अता से औलिया अल्लाह दूर की बात जान भी लेते हैं और मदद

भी करते हैं.

इल्मे ग़ैब

अकाबिर उलमाऐ देवबन्द मौलाना ज़करया साहब अपनी किताब फज़ाइले आमाल जिल्द:1 फज़ाइले ज़िक्र के सफह न:656 पर लिखते हैं कि इमाम आज़म अबू हनीफा रदीअल्लाहु अन्हु जब किसी शख्स को वज़ू करते देखते तो पानी के कतरो से बता देते कि उसने सगीरा गुनाह किया है या कबीरा गुनाह.

फायदा: इमाम आज़म अबू हनीफा रदीअल्लाहु अन्हु पानी के कतरों से छुपे गुनाहों को जान लेते थे और सिर्फ यही नहीं गुनाह छोटा हे या बड़ा ये भी बता दिया करते थे. इस वाकेय से इमाम आज़म का इल्मे ग़ैब साबित होता है.

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की तारीफ कैसे हो अल्लाह के सिवा कोई नही जानता.

अहले सुन्नत का अकीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की हक़ीक़ी तारीफ कोई करना चाहे तो भी नही कर सकता सिवाऐ अल्लाह के. दलील मुलाहिज़ा फरमाएं:

अकाबिर उल्माऐ देवबन्द मौलवी अशरफ थानवी साहब अपनी किताब नशरुत-तीब के सफह न:183 पर लिखते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम दुनिया और आखिरत के सरदार हैं. और आप सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम की ज़ात की तरफ जो खूबियां चाहो मंसूब करो वो काबिले तसलीम होंगी. और आप जिस कदर अज़ीम तारीफे बड़ाइयां करो वो सब सही होंगी क्योकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के रिसालत के फज़ल की कोई हद नहीं कि कोई अपनी ज़ुबान से आपकी तारीफ कर सके.

फायदा: थानवी साहब के इस कौल से साबित होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के मरतबे को अल्लाह पाक के सिवा कोई नहीं जानता.

नोट: अहले सुन्नत 'बरेलवियों' ने अपने अकीदे साबित कर दिए' एतराज़ करने वालो के अकाबिर उलमाओं की किताबों से हम दावत हक़ देते हैं कि कुरआन व सुन्नत के मुताबिक अपने अकीदे दुरुसत कर लें. अल्लाह तआला से दुआ है कि अपने हबीब सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि वसल्लम के सदके उम्मत में आपसी मुहब्बत अता फरमाऐं.

و قل جاء الحق و زهق الباطل ان الباطل کان زهوقا (قرآن)

ترجمہ: اور فرما دیجئے کہ حق آ گیا اور باطل مٹ گیا، بیشک باطل مٹنے والا ہے

محمد ﷺ کی محبت دین حق کی شرط اول ہے
اسی میں ہو اگر خامی تو سب کچھ نامکمل ہے

پیغام حق

تالیف: پیر طریقت محبوب الاولیاء الحاج سید محمد طارق علی صاحب قبلہ

ناشر: خانکاہ حیدری (دہلی برانچ)

تفصیلات

نام کتاب	: پیغام حق	
مصنف	: پیر طریقت محبوب الاولیاء الحاج سید محمد طارق علی صاحب قبلہ	
ترتیب	: سید محمد جابر قادری آمیری	
تصدیق	: سید محمد صدیق قادری	سید محمد ذہین قادری
	: سید محمد وسیم قادری	حافظ محمد فروز لطیفی
ٹائپنگ	: سید محمد فرمود علی قادری جافری	
	: محمد عمران قادری برکاتی	
زیر سرپرست	: سید شاہ سردار غلام احمد (سجادہ نشین خانکاہ حیدری)	
امداد	: سید محمد اعجاز علی	
	: محمد وسیم برکاتی	
سنہ اشاعت	: ۲۰۱۶	

ملنے کا پتہ

مدرسہ شہید اعظم (گلی نمبر:۳، بجرنگ بلی محلّہ، دہلی:۵۳)

مدرسہ حیدری شہید اعظم (گلی نمبر:۲، کلیان دہلی:۵۳)

فون نمبر: ۹۱۳۶۸۱۶۶۷۲

: ۹۹۶۸۴۲۳۱۷۲

☆ عرض مرتب

تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لئے ہیں اور بے حد درود وسلام ہو حضرت محمد ﷺ پر جنہوں نے حق کا پیغام دیا، اس کتاب کا مقصد کسی اسلامی بھائی کو ذلیل کرنا یا نیچا دکھانا نہیں ہے۔ اس کتاب میں فقط اتنا ہے کہ جن اہل سنت کے عقیدے کو کچھ اعتراض کرنے والے حضرات کفر اور شرک بولتے ہیں، انہی کے علماء ان مسئلوں میں کیا جواب دیتے ہیں، جو عقیدے اہل سنت کے ہیں یہی عقیدے ہمیشہ سے اہل اسلام کے ہیں، تو ان حضرت سے گذارش ہے کہ تعصب اور بغض کو دور کرتے ہوئے جو عقائد کسی کے نزدیک غلط نہیں ہیں، انہیں لاعلمی کا چشما ہٹا کر اپنے دل پر ہاتھ رکھ کر پیغام حق کو پڑھیں اور اپنا عقیدہ کم سے کم اس بات پر رکھیں کہ یہ سارے عقیدے غلط نہیں ہیں بلکہ اعتراض کرنے والوں کے امام سے بھی ثابت ہو رہے ہیں، اللہ ہمیں حق کے پیغام پر عمل کرنے کی توفیق ورفیق عطا فرمائے، آمین۔

نوٹ: اعتراض کرنے والوں سے گزارش ہے کہ اگر اس کتاب کے مطابق اپنے عقیدے درست کر لئے تو امت میں اختلاف ختم ہو جائیگا۔ اس کتاب میں سارے حوالے اعتراض کرنے والوں کے بڑے اماموں کی کتابوں سے دیئے گئے ہیں۔ اہل سنت تو اسی عقیدے پر ہیں، اعتراض کرنے والوں سے گزارش ہے کہ اس عقیدے پر آئیں، یہ عقیدہ ہمیشہ سے مسلمانوں کا رہا ہے۔

اگر اہل سنت کے ان عقائد کے ریفرینس قرآن وحدیث سے چاہئے تو ''جاءالحق'' پڑھے، یہ کتاب ہندی اور اردو دونو زبانوں میں موجود ہے۔

سید محمد جابر قادری برکاتی آمیری

☆قبر میں شجرہ رکھنا

اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ قبر میں شجرہ رکھنا باعث خیر ہے لیکن اعتراض کرنے والے اسے ناجائز کہتے ہیں اور طرح طرح کے سوال کر کے عوام کو پریشان کرتے ہیں۔

اس کے جواز کی دلیل انہیں کی کتاب سے ملاحظہ فرمائیں:

اکابر علمائے دیوبند مولانا عاشق الٰہی صاحب اپنی کتاب تذکرۃ الرشید حصہ دوم کے صفہ نمبر: ۳۶۳ پر لکھتے ہیں کہ ایک بار مولانا اشرف علی تھانوی صاحب نے مولانا رشید گنگوہی صاحب سے دریافت کیا کہ کیا قبر میں شجرہ رکھنا جائز ہے یا نہیں اور اگر جائز ہے تو کیا فائدہ بھی پہنچتا ہے؟ گنگوہی صاحب نے کہا ہاں جائز بھی ہے اور فائدہ بھی پہنچتا ہے۔

فائدہ: قبر میں شجرہ رکھنا جائز ہے۔

☆اللہ پاک کی عطا سے حضور ﷺ عطا فرماتے ہیں

(حضور ﷺ سے مانگنا شرک نہیں)

اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ حضور ﷺ، اللہ تعالیٰ کی عطا سے ہر اس امتی کی مدد کرتے ہیں جو حضور ﷺ کو پکارتا ہے، کچھ اعتراض کرنے والے اہل سنت کے اس عقیدے کو شرک بولتے ہیں، اہل سنت کا یہ عقیدہ حق ہے، اعتراض کرنے والوں کی ہی کتاب سے دلیل پیش کر رہے ہیں ملاحظہ فرمائیں۔

دلیل نمبر(۱) اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال (ہندی) جلد:۱ فضائل درود شریف کے صفحہ نمبر:۱۰۵۷ پر واقعہ نقل کرتے ہیں، حضرت سفیان ثوری فرماتے ہیں میں طواف کر رہا تھا میں نے ایک شخص کو دیکھا وہ ہر قدم پر درود پڑھتا تھا، جب میں نے اس سے پوچھا، اس نے کہا میرے والد حج کو جا رہے تھے اچانک انکا انتقال ہو گیا اور انکا منہ کالا ہو گیا، میں نے انکا منہ چادر سے ڈھانپ دیا، اتنے میں مجھے نیند آ گئی ،خواب میں کیا دیکھتا ہوں ایک بزرگ میری طرف آ رہے ہیں میرے باپ کے منہ سے چادر ہٹائی اور ہاتھ فیرا تو چہرا سفید ہو گیا، وہ جانے لگے تو میں نے ان کا دامن پکڑ لیا اور کہا اللہ آپ پر رحم کرے آپ کون ہیں۔ بزرگ نے فرمایا میں تیرا نبی ﷺ ہوں، تیرا باپ بڑا گناہ گار تھا لیکن مجھ پر کثرت سے درود پڑھتا تھا ۔جب اس پر یہ مصیبت آئی، تو میں اسکی فریاد کو پہنچا اور میں ہر اس شخص کی فریاد (مدد) کو پہنچتا ہوں جو مجھ پر ہر وقت درود پڑھتا ہے۔

اس واقعہ سے مندرجہ ذیل عقیدے ثابت ہوتے ہیں:

۱۔ عقیدہ: اس واقعہ سے ثابت ہوا کہ حضور ﷺ ہر اس امتی کی مدد کے لئے تشریف لاتے ہیں جسکی حضور ﷺ مدد کرنا چاہیں۔صرف یہ ہی نہیں امتی کے پاس تشریف بھی لے جاتے ہیں، یہی اہل سنت کا عقیدہ ہے۔

۲۔ عقیدہ: حضور ﷺ کو علم ہے کہ آپ کا امتی پریشانی کے عالم میں ہے اس سے علمِ غیبِ مصطفیٰ ﷺ بھی ثابت ہوتا ہے۔

دلیل نمبر(۲) اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال (ہندی) جلد:۲ فضائل حج کے صفحہ نمبر:۹۵۲ پر ایک واقعہ

نقل کرتے ہیں کہ مدینہ منورہ میں ایک سیدہ خاتون رہتی تھی اور بعض خدام ان کو ستایا کرتے تھے، وہ حضورِ اکرم ﷺ کی مزارِ اقدس پر فریاد لے کر حاضر ہوئی ،کچھ دن بعد وہ خدام مر گئے۔

۱۔ فائدہ: حضور ﷺ کے ظاہری وصال کے بعد ایک سیدہ خاتون حضور ﷺ کے مزار پاک پر جا کر فریاد کرتی ہیں، اور حضور ﷺ کا مدد فرمانا بھی ثابت ہوتا ہے

۲۔ فائدہ: پریشانی کے عالم میں حضور ﷺ کی قبر انور پر جا کر فریاد کرنا ،یہ طریقہ ہمیشہ سے مسلمانوں میں رہا ہے۔

دلیل نمبر:۳۔ اکابر علماء دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال (ہندی) جلد:۲، فضائل حج کے صفحہ نمبر:۹۵۳ پر ایک حدیث نقل کرتے ہیں کہ ایک مرتبہ مدینہ منورہ میں قحت (سوکھا) پڑا، ایک صحابی، حضور ﷺ کی قبر انور پر حاضر ہوئے اور عرض کیا یا رسول اللہ ﷺ! آپ کی امت حلاک ہو رہی ہے، اللہ سے بارش مانگ لیجئے ،انہوں نے حضور ﷺ کی خواب میں زیارت کی، حضور ﷺ نے فرمایا بارش ہوگی اور عمر کو میرا اسلام کہہ دینا۔

۱۔ فائدہ: بارش نہ ہونے پر صحابہ نے حضور ﷺ کی قبر انور پر دعاء مانگی ،صحابہ کرام کا یہ عمل بتا رہا ہے کہ حضور ﷺ کی قبر انور پر حاضر ہو کر حضور ﷺ سے مدد مانگنا جائز ہے۔

۲۔ فائدہ: صحابہ کے اس عمل سے ثابت ہوتا ہے کہ اللہ پاک کی عطا سے نبی پاک ﷺ کو اختیار حاصل ہے کہ حضور ﷺ بارش عطا کر سکتے ہیں۔

۳۔ فائدہ: ایک بات اور قابل غور یہ ہے کہ صحابہ کرام رضوان اللہ علیہم

اجمعین نے اللہ سے دعاء کرنے کے بجائے، حضور ﷺ کے روضہ پاک پر حاضر ہوکر اپنی پریشانی بیان کی کیونکہ صحابہ کا عقیدہ ہے کہ دیتا اللہ ہی ہے لیکن بانٹتے حضور ﷺ ہیں۔

دلیل نمبر: اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال (ہندی) جلد:۱، فضائل درود شریف کے صفحہ نمبر:۱۰۷۵ پر اشعار روایت کرتے ہیں، ان اشعار میں حضور ﷺ سے مدد مانگی گئی ہے، جبکہ اعتراض کرنے والوں کا اجماعی مسئلہ ہے کہ حضور ﷺ کو مدد کے لئے پکارنا شرک ہے:

شعر نمبر:۱۔ آپ کی فراق ذرہ ذرہ دم توڑ رہا ہے، یارسول نگاہ کرم فرمائیں، اے خاتم الرسول رحم فرمائیں۔

(اس شعر میں حضور ﷺ سے کرم کی بھیک مانگی گئی ہے)

شعر نمبر:۲۔ عاجزوں کی دستگیری، بیکسوں کی مدد فرمائیں۔

(اس شعر میں حضور ﷺ سے مدد مانگی گئی ہے)

شعر نمبر:۳۔ (یارسول اللہ ﷺ) اگر آپ کے کرم کی مدد شامل حال نہ ہوگی تو ہم سے کوئی کام انجام نہ ہوسکیگا۔

(اس شعر میں کہا گیا ہے کہ یارسول اللہ اگر آپکی مدد نہ ملی تو ہمارے کام انجام تک نہیں پہنچ سکتے)

فائدہ: ان سب اشعار میں حضور ﷺ سے مدد مانگی گئی ہے، حضور ﷺ اللہ تعالیٰ کی عطا سے مدد فرماتے ہیں۔

دلیل نمبر:۵ اکابر علمائے دیوبند مولانا اشرف تھانوی صاحب اپنی کتاب نشر الطیب کے صفحہ نمبر:۱۷۲، پر ایک قصیدہ لکھتے ہیں قصیدے کا خلاصہ یہ ہے، میں قسم کھا کر کہتا ہوں، کوئی پریشان حال امتی پریشانی میں حضور ﷺ کے

روضہ انور پر اپنا حال عرض کرتا ہے تو اسکی پریشانی دور ہوئی۔

☆ مرید کرنے کی دلیل

مسلمان ہمیشہ سے روحانی تربیت کے لئے بزرگان دین کے سلسلوں میں مرید ہوتے آئے ہیں، اعتراض کرنے والے حضرات پیری، مریدی کو ناجائز کہتے ہیں جبکہ خود گنگوہی صاحب قادری سلسلے میں مرید کرتے تھے، دلیل ملاحظہ فرمائیں:

اکابر علمائے دیوبند مولانا عاشق الٰہی صاحب اپنی کتاب تذکرۃ الرشید حصہ دوم کے صفحہ نمبر:۱۳۷ سے ۱۴۶ تک گنگوہی صاحب کے ان سلسلہ کا تفصیلاً ذکر ہے، وہ ان سلسلوں میں مرید کرتے تھے۔ جیسے قادری، چیشتی، نقشبندی، سہروردی وغیرہ

فائدہ: یہ چاروں سلسلے ہمیشہ سے اہل سنت میں رہے ہیں اور آج بھی ہیں۔

☆علمائے دیوبند کی کتابوں سے یہ بھی ثابت ھوتا ھے کہ مرید ھونے پر خاتمہ اچھا ھوتا ھے

مولانا اشرف تھانوی صاحب کی سوانح حیات ''اشرف السوانح'' جلد سوم صفہ نمبر:۱۴۲ پر تحریر ہے کہ حضرت تھانوی کے متوسلین کے حسن خاتمہ کے بکثرت واقعات ہیں، جن سے مقبولیت و برکت سلسلہ ظاہر ہوتی ہے۔ چنانچہ خود حضرت والا فرمایا کرتے ہیں کہ حضرت حاجی صاحب کے سلسلہ کی یہ برکت ہے کہ جو بلا واسطہ یا بواسطہ حضرت سے بیعت ہو، اس کا بفضلہٖ تعالیٰ خاتمہ تو بہت اچھا ہوتا ہے۔

حاجی امداداللہ رحمۃ علیہ خود بھی سلسلہ قادری، چشتی، نقشبندی، سہروردی میں مرید کرتے تھے۔

☆حضرت سید شاہ عبد القادر کو غوث الثقلین (دونوں عالم کا مددگار) کہنے کی دلیل

اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ اللہ کی عطا سے غوث اعظم شیخ عبدالقادر جیلانی رحمۃ اللہ علیہ، غوث الثقلین (دونوں عالم کا مددگار) ہیں۔ ہمارے اس عقیدے کی دلیل اعتراض کرنے والوں کی کتاب سے ملاحظہ فرمائیں:

اکابر علمائے دیو بند مولانا عاشق الٰہی صاحب اپنی کتاب تذکرۃ الرشید حصہ دوم کے صفحہ نمبر:۱۴۱ پر غوث اعظم شیخ عبدالقادر جیلانی رحمۃ اللہ علیہ کو غوث الثقلین یعنی (دونوں عالم کا مددگار) لکھتے ہیں۔

☆پیر بخش ، حسین بخش اور فرید بخش وغیرہ نام رکھنے کی دلیل

اعتراض کرنے والے کہتے ہے کہ جس نے حسین بخش، نبی بخش نام رکھا تو ایسا نام رکھنے والا مشرک یعنی کافر ہے۔ اور اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ ایسے نام رکھنا بلا شبہ جائز ہے۔ خود گنگوہی صاحب کے دادا اور نانا کے نام بطور دلیل ملاحظہ فرمائیں:

اکابر علمائے دیو بند مولانا عاشق الٰہی صاحب اپنی کتاب تذکرۃ الرشید حصہ اول کے صفحہ نمبر:۳۲ پر گنگوہی صاحب کا نسب نامہ لکھتے ہیں کہ نانا کا نام فرید بخش ہے اور دادا کا نام پیر بخش ہے۔

فائدہ: گنگوہی صاحب کے دادا اور نانا کے نام بتا رہے ہیں کہ گنگوہی صاحب کے دادا اور نانا کس عقیدے کے تھے۔

☆اعلیٰ حضرت کہنے کے اعتراض کا

جواب

کچھ اعتراض کرنے والے حضرات امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ کو اعلیٰ حضرت کہنے پر اعتراض کرتے ہیں جبکہ:

اکابر علمائے دیو بند مولانا عاشق الٰہی صاحب اپنی کتاب تذکرۃ الرشید میں اکابر علماء دیو بند کے پیر حاجی امداد اللہ رحمۃ اللہ علیہ کو تقریباً ۷۰ مرتبہ اعلیٰ حضرت لکھا ہے۔

☆ مولانا رشید گنگوھی صاحب دیوبندیوں کے غوث اعظم ھیں

اہل سنت حضرات پیران پیر شیخ عبد القادر جیلانی کو غوث اعظم کہتے ہیں، تو اعتراض کرنے والے اسے شرک بولتے ہیں جبکہ:

اکابر علمائے دیو بند مولانا عاشق الٰہی صاحب اپنی کتاب تذکرۃ الرشید حصہ اول کے صفحہ نمبر:۱۷ پر، گنگوہی صاحب کو غوث اعظم (سب سے بڑا امددگار) لکھتے ہیں۔

☆جشن عید میلاد النبی ﷺ منانے کا جواز

اہل اسلام ہمیشہ سے حضور ﷺ کی ولادت کی خوشی مناتے رہے ہیں، جشن عید میلاد النبی ﷺ کی خوشی منانے پر دلیل اکابر علمائے دیو بند کی کتاب سے ملاحظہ فرمائیں:

دیو بندی مولوی عبدالحئی صاحب اپنی کتاب فتاویٰ عبدالحئی کے صفحہ نمبر: ۹۵ پر فرماتے ہیں کہ سرور انبیاء کی ولادت کا ذکر جو لاکھوں برکتوں اور مسرتوں کا سبب ہے۔ ابولہب کی باندی جو بعد میں ایمان لے آئی، ثویبہ رضی اللہ عنہا جب خبر ولادت لے کر جاتی ہیں، تو وہ خوشی سے سرشار ہو کر اس کو آزاد کر دیتا ہے، اس کے

مرنے کے بعد لوگوں نے خواب میں اس کا حال پوچھا۔ابولہب جواب میں کہتا ہے موت کے دن سے برابر عذاب میں مبتلا ہوں مگر دوشنبہ (پیر) کی رات میں حضرت ﷺ کی ولادت سے خوشی ہونے کی وجہ سے عذاب میں تخفیف ہوجاتی ہے پس جبکہ حضرت ﷺ کی ولادت کی خوشی سے ابولہب جیسے بدبخت کے عذاب میں تخفیف ہوسکتی ہے تو اگر آپ ﷺ کا ایک امتی جو ولادت سے خوش ہو کر اپنی محبت کا اظہار کرتا ہے تو کیوں اعلیٰ مرتبہ پر نہ پہنچے گا۔

فائدہ: معلوم ہوا کہ حضور ﷺ کی ولادت کی خوشی منانا اعلیٰ مرتبہ پر پہنچنے کا بہترین عمل ہے۔

☆ قبلہ و کعبہ و سیدی اور طریقت کا مربی کہنے کی دلیل

تمام مسلمانوں کا اس پر عمل رہا ہے کہ علماء صوفی بزرگوں کے نام کے آگے قبلہ و کعبہ وسیدی بطور تعظیم لکھتے ہیں۔جب کہ اعتراض کرنے والوں کے علماؤں کی کتابوں سے ثابت ہے کہ علماء بزرگوں کے نام کے آگے قبلہ و کعبہ وسیدی لکھنا جائز ہے۔
دلیل ملاحظہ فرمائیں:

’’اشرف السوانح‘‘ جلد چہارم صفحہ نمبر:۱۸۱ پر، مولانا اشرف تھانوی صاحب کا نام کچھ اس طرح لکھا ہے قبلہ و کعبہ وسیدی مولانا اشرف تھانوی اور طریقت کا مربی۔

فائدہ: اس دلیل سے ثابت ہوتا ہے کہ بزرگوں اور علماء کرام کے نام کے آگے تعظیم کے لئے قبلہ و کعبہ وسیّدی لکھنا جائز ہے۔

☆مولاء لکھنے کی دلیل

اعتراض کرنے والے حضرات، حضرت علی کو مولیٰ علی کہنے کو شرک کہتے ہیں، مولانا

اشرف تھانوی صاحب کے نام کے آگے مولیٰ لکھا ہے، دلیل ملاحظہ فرمائیں:
ارواح ثلاثہ کے صفحہ نمبر:۱۴۰ پر اشرف تھانوی کا نام کچھ اس طرح لکھا ہے، حضرت قبلہ سیدی مولائی حکیم الامت اشرف تھانوی۔

☆اللہ تعالیٰ کے حکم سے حضور ﷺ دنیا میں کہیں بھی تشریف لے جا سکتے ہیں۔

اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ حضور پاک ﷺ بعد وصال جہاں چاہیں تشریف لے جا سکتے ہیں اور مدد بھی فرماتے ہیں، دلیل ہم اکابر علمائے دیوبند کی کتاب سے پیش کررہے ہیں ملاحظہ فرمائیں:

اکابر علمائے دیوبند مولانا عاشق الٰہی صاحب اپنی کتاب احوال برزخ کے صفحہ نمبر:۴۵۔۴۶ پر ایک حدیث روایت کرتے ہیں، حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ روایت کرتے ہیں کہ ایک مرتبہ ہم حضور ﷺ کے ساتھ مکہ اور مدینہ کے درمیان سفر کررہے تھے، آپ ﷺ نے ایک وادی کے متعلق دریافت کیا کہ یہ کون سی وادی ہے؟ حاضرین نے جواب دیا کہ ’’وادی ارزق‘‘ ہے آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ گویا میں دیکھ رہا ہوں، موسیٰ علیہ السلام کی طرف۔یہ فرما کر ان کا رنگ اور بالوں کی کیفیت کچھ بیان فرمائی، اور فرمایا وہ اپنے رب کے نام کا تلبیہ زور زور سے پڑھتے ہوئے اس وادی سے گزر رہے ہیں۔

پھر دوسری حدیث پیش کرتے ہیں: حضرت ابن عباس فرماتے ہیں ہم آگے چلے حتیٰ کہ ایک وادی آئی، آپ ﷺ نے اس وادی کے متعلق دریافت کیا یہ کون سی وادی ہے؟ حاضرین نے جواب دیا کہ یہ ’’ہرشیٰ‘‘ ہے، آپ ﷺ نے فرمایا گویا میں یونس علیہ السلام کو دیکھ رہا ہوں وہ سرخ اونٹنی پر سوار ہیں، اور ان کے جسم پر

اون کا جبہ ہے اوران کی اونٹنی کی لگام درخت کی چھال کی ہے تلبیہ پڑھتے ہوئے اس وادی سے گزر رہے ہیں۔

مولانا عاشق الٰہی صاحب یہ حدیثیں پیش کرنے کے بعد آگے لکھتے ہیں، اس مبارک حدیث سے ثابت ہوتا ہے کہ حضور ﷺ نے موسیٰ اور یونس علیہما السلام کو حالت بیداری میں تلبیہ پڑھتے دیکھا، معلوم ہوا حضرات انبیاء کرام علیہ الصلوٰۃ و السلام کی حیات برزخیہ اس قدر اکمل اور اس قدر رفیع ہے کہ اس دنیا میں تشریف لاسکتے ہیں اور مناسک حج ادا کرسکتے ہیں اور ان کا حال دیکھا جانا بھی ممکن ہے بعض بزرگوں سے منقول ہے کہ انھوں نے حضور ﷺ کو بیداری میں دیکھا ہے اور یہ جھوٹ نہیں ہے۔

فائدہ: اس دلیل سے ثابت ہوتا ہے حضور ﷺ جہاں چاہے تشریف لاسکتے ہیں۔

☆ کھڑے ہوکر سلام پڑھنا

اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال (ہندی) جلد:۲ فضائل حج کے صفہ نمبر:۹۳۶ پر ایک حدیث تحریر کرتے ہیں حضرت ابو حازم روایت کرتے ہیں کہ ایک شخص نے آکر کہا میں نے حضور ﷺ کو خواب میں دیکھا ہے آپ ﷺ نے فرمایا ابو حازم سے کہہ دینا ہمارے پاس سے گزرتے ہو کھڑے ہوکر سلام نہیں پڑھتے پھر آپ جب بھی وہاں سے گزرتے تو، کھڑے ہوکر سلام پڑھتے۔

☆ اللہ والوں کی محبت خاتمہ خیر کی نشانی ہے۔

اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ اولیاء اللہ کی محبت، خاتمہ خیر کی نشانی ہے، دلیل اعتراض

کرنے والوں کی کتاب سے ملاحظہ فرمائیں:

اکابر علمائے دیوبند مولانا عاشق الٰہی صاحب اپنی کتاب تذکرۃ الخلیل کے صفہ نمبر: ۵۰۰ پر لکھتے ہیں 'اللہ والوں کی محبت دل میں ہو تو انشاء اللہ خاتمہ کبھی خراب نہ ہوگا اور دل میں اگر اللہ والوں سے بغض ہو تو خاتمہ خراب ہونے کا اندیشہ ہے۔

فائدہ: اس دلیل سے ثابت ہوتا ہے کہ اولیاء اللہ کی محبت دل میں ہوگی تو خاتمہ ایمان پر ہوگا، اور اگر اولیاء اللہ کی محبت دل میں نہ ہو تو خاتمہ برا ہونے کا اندیشہ ہے۔

نوٹ؛ ایک بات اور قابل توجہ ہے کہ اولیاء اللہ کی محبت، حق پر ہونے کی پہچان

☆ حضور ﷺ ساری مخلوق کے سردار ہیں

اکابر علماء دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال (ہندی) جلد:۱ فضائل درود شریف کے صفہ نمبر:۹۶۴ پر ایک قول نقل فرماتے ہیں کہ جمعہ کا دن تمام دنوں کا سردار ہے اور حضور اقدس ﷺ کی ذات پاک ساری مخلوق کی سردار ہے۔

☆ حضور ﷺ کے روضہ انور پر صلوٰۃ و سلام پڑھنا اور مراقبہ کرنا

اہل سنت کا معمول رہا ہے کہ بزرگان دین کے روحانی فیض کے لئے مراقبہ کیا جاتا رہا ہے، دیوبندی حضرات کی کتاب میں یہ بات درج ہے کہ گنگوہی صاحب خود مراقبہ کرتے تھے، دلیل ملاحظہ فرمائیں:

اکابر علماء دیوبند مولانا عاشق الٰہی صاحب اپنی کتاب تذکرۃ الرشید جلد اول کے صفہ نمبر:۳۳۴ پر لکھتے ہیں کہ گنگوہی صاحب حضور ﷺ کے روضہ اطہر پر حاضر

ہوئے اور صلوٰۃ وسلام پڑھا اور مراقبہ میں بیٹھ گئے۔

فائدہ: اس دلیل سے ثابت ہوتا ہے کہ بعد وصال اولیاء اللہ اپنا فیض دے سکتے ہیں۔

نوٹ: مزار پر جا کر، صاحب مزار کے فیض لینے کی نیت سے بیٹھنا مراقبہ کہلاتا ہے، تا کہ مزار والے سے فیض حاصل ہو۔

☆☆حضور ﷺ پر کثرت سے درود پاک پڑھنا اہل سنت یعنی سنی ہونے کی علامت ہے

اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال (ہندی) جلد: ۱ فضائل درود شریف کے صفحہ نمبر: ۹۲۳ پر ایک قول نقل کرتے ہیں کہ علامہ سخاوی نے امام زین العابدین رضی اللہ عنہ سے نقل کیا ہے کہ حضور ﷺ پر کثرت سے درود بھیجنا اہل سنت کی پہچان ہے

فائدہ: کثرت سے درود و سلام پڑھنے کا حق ہونے کی دلیل ہے، جو اہل سنت میں پائی جاتی ہے۔

☆بزرگوں کی قبروں پر چھت و گنبد بنوانا

مولانا اشرف تھانوی صاحب اپنی کتاب نشر الطیب کے صفحہ نمبر: ۲۱۷ پر ایک حدیث تحریر کرتے ہیں کہ مدینہ منورہ میں ایک بار سخت قحت (سوکھا) ہوا، لوگوں نے حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا سے شکایت کی، آپ نے فرمایا کہ نبی کریم ﷺ کی قبر انور کو دیکھ کر اس کے مقابل آسمان کی طرف اس میں ایک منفذ کر دو، یہاں

تک کہ اس کے اور آسمان کے درمیان حجاب نہ رہے، چنانچہ ایسا ہی کیا گیا تو بہت زور کی بارش ہوئی۔

فائدہ: حضور ﷺ کی قبر مبارک کے اوپر چھت بنی تھی، کیونکہ کھولی وہی چیز جاتی ہے جو بند ہو، معلوم چلا کہ قبر پر چھت ڈالنا صحابہ کرام رضوان اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین کی سنت ہے۔

☆قبر میں سوال حضور ﷺ کا ہوگا

قبر آخرت کی پہلی منزل ہے جو اس میں کامیاب ہو گیا اس کی آگے کی منزل آسان ہوگئی، عام طور پر ہم یہ بولتے ہیں کہ نماز، روزے کی پابندی کرو، قبر میں آسانی ہوگی جبکہ قبر میں سوال اس کے بارے میں نہیں ہوگا بلکہ حضور ﷺ کے بارے میں ہوگا۔ نماز کا سوال تو حشر میں ہوگا۔ اس سوال کا جواب وہی دے سکے گا جسکے دل میں حضورِ پاک ﷺ کی سچی محبت ہوگی، دلیل ملاحظہ فرمائیں،

اکابر علماء دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال (ہندی) جلد: ۱ فضائل درود شریف کے صفحہ نمبر: ۹۳۱ پر ایک حدیث لکھتے ہیں کہ حضور ﷺ نے فرمایا مجھ پر کثرت سے درود پاک پڑھو، اس لئے کہ قبر میں ابتداً تم سے میرے بارے میں سوال ہوگا۔

فائدہ: ۱۔ اس دلیل سے ثابت ہوتا ہے کہ حضور ﷺ کی محبت اصل ایمان ہے اس لئے قبر میں ابتداً سوال حضور ﷺ کے بارے میں ہوگا، کیونکہ قبر میں مومن کا ایمان پرکھا جائیگا اور ایمان حضور ﷺ ہی ہیں۔

☆حضور ﷺ نہ ہوتے تو کچھ بھی نہ ہوتا اور وسیلہ

اہل سنت کا یہ عقیدہ ہے کہ یہ ساری کائنات اللہ پاک نے حضور پاک ﷺ کے لئے بنائی ہے دلیل ملاحظہ فرمائیں:

اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال (ہندی) جلد:۲ فضائل حج کے صفہ نمبر:۹۲۸ پر ایک حدیث روایت کرتے ہیں کہ جب آدم علیہ السلام دنیا میں بھیجے گئے تو ہر وقت روتے رہے، ایک دن آپ نے اللہ سے عرض کیا میں محمد ﷺ کے صدقہ میں تجھ سے مغفرت چاہتا ہوں۔ وحی نازل ہوئی کہ محمد ﷺ کو تم نے کیسے پہچانا، تو آدم الیہ السلام نے عرض کیا جب تو نے مجھے پیدا کیا تھا تو میں نے عرش پر لکھا دیکھا ''لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ ﷺ'' تو میں سمجھ گیا تھا کہ محمد ﷺ سے بڑھ کر کوئی اونچی ہستی نہیں ہے جس کا نام تو نے اپنے نام کے ساتھ رکھا، وحی آئی اگر وہ نہ ہوتے تو تم بھی پیدا نہ کیئے جاتے۔

فائدہ: اللہ تعالیٰ نے یہ دنیا حضور ﷺ کی خاطر بنائی ہے، اگر حضور نبی پاک ﷺ کو پیدا کرنا مقصود نہ ہوتا تو اللہ تعالیٰ کل کائنات بھی نہ بناتا۔

فائدہ: حضور ﷺ کے وسیلہ سے آدم الیہ السلام کی دعاء قبول ہوئی۔

☆گمراہ نہ ہونے کی زمانت اہل بیت کی محبت ہے

مولانا اشرف تھانوی صاحب اپنی کتاب نشر الطیب کے صفہ نمبر:۲۲۷ پر ایک

حدیث تحریر کرتے ہیں کہ حضور ﷺ نے فرمایا کہ میں تم میں دو چیزیں چھوڑے جا رہا ہوں ایک کتاب اللہ اور دوسری میرے اہل بیت یعنی علی، فاطمہ، حسن اور حسین رضوان اللہ تعالیٰ علیھم اجمعین

فایدہ: اہل سنت، اہل بیت کی محبت کے قائل ہے اس کا اندازہ محرم کے مہینے میں لگ جاتا ہے، اہل بیت کی محبت گمراہ نہ ہونے کی زمانت ہے اور کچھ لوگ حضرت امام حسن اور امام حسین سے ہماری عقیدت اور محبت دیکھ کر شیعہ ہونے کا الزام لگاتے ہیں جبکہ حق پر ہونے کی علامت ہی یہ ہے کہ حضرت علی، حضرت فاطمہ حضرت حسن اور حضرت حسین رضوان اللہ تعالیٰ علیھم اجمعین سے محبت کی جائے۔

☆کرامت حق ہے اور اولیاء اللہ کی کرامت ماننا اہل سنت و جماعت ہونے کی دلیل ہے

دلیل ملاحظہ فرمائیں:

اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال (ہندی) جلد:۱ فضائل درود شریف کے صفہ نمبر:۱۰۶۷ پر بیان کرتے ہیں کہ شاہ ولی اللہ ایک واقعہ کی شرح میں فرماتے ہیں ''اہل سنت و جماعت کا وعقیدہ ہے کہ کرامت اولیاء حق ہے''۔

فائدہ: ہم اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ اولیاءاللہ، اللہ کی عطا سے کرامت کرتے

ہیں جیسے اللہ کی عطا سے مردے زندہ کرنا اور اللہ تعالیٰ کی عطا سے اولادیں عطا کرنا۔

☆حضور ﷺ آدم علیہ السلام کی پیدائش سے پہلے بھی نبی تھے۔

اعتراض کرنے والوں کا عقیدہ یہ ہے کہ اللہ کے رسول ﷺ کو نبوت ۴۰ سال کی عمر میں ملی۔

اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ حضور ﷺ کو اللہ پاک نے آدم علیہ السلام کی پیدائش سے بھی پہلے نبی بنا دیا تھا، دلیل ملاحظہ ہو:

مولانا اشرف تھانوی صاحب اپنی کتاب نشر الطیب کے صفحہ نمبر:۶ پر ایک حدیث تحریر کرتے ہیں: صحابہ کرام رضوان اللہ علیہم اجمعین نے عرض کیا یا رسول اللہ ﷺ آپ ﷺ کے لئے نبوت کس وقت ثابت ہو چکی تھی، آپ ﷺ نے فرمایا کہ جس وقت آدم علیہ السلام مٹی اور روح کے درمیان تھے میں اس وقت بھی نبی تھا۔ (یعنی ان کا جسم بنا بھی نہ تھا)

فائدہ: آپ ﷺ اس وقت سے نبی ہیں جب وقت بھی نہ تھا۔ اس حدیث میں یہ ذکر ہے کہ حضور ﷺ آدم علیہ السلام کی پیدائش سے پہلے بھی نبی تھے، حضور

☆اللہ والوں کے مزار پر دعائیں قبول ہوتی ہیں

اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال (ہندی) جلد:۱ فضائل درود شریف کے صفحہ نمبر:۱۰۴۸ پر ایک واقعہ نقل کرتے ہیں کہ ایک تاجر تھا

اسکے انتقال کے بعد اس کے دونوں بیٹوں میں آدھا آدھا مال تقسیم ہوا، لیکن ترکہ میں حضور ﷺ کے تین بال شریف بھی تھے، ایک ایک دونوں نے لے لیا، تیسرے بال کے متعلق بڑے بھائی نے کہا کہ اس کو بھی آدھا آدھا کرلیں۔ چھوٹے بھائی نے کہا ہرگز نہیں خدا کی قسم حضور ﷺ کا بال مبارک نہیں کاٹا جا سکتا۔ بڑے بھائی نے کہا کیا تو اس پر راضی ہے کہ یہ تینوں بال مبارک تو لے لے اور یہ سارا مال میرے حصہ میں لگا دے۔ چھوٹا بھائی خوشی سے راضی ہو گیا۔ بڑے بھائی نے سارا مال لے لیا اور چھوٹے بھائی نے تینوں بال مبارک لے لئے وہ ان کو اپنی جیب میں ہر وقت رکھتا اور بار بار نکالتا اور ان کی زیارت کرتا اور درود شریف پڑھتا۔ تھوڑا ہی زمانہ گزرا تھا کہ بڑے بھائی کا سارا مال ختم ہو گیا اور چھوٹا بھائی بہت زیادہ مال دار ہو گیا۔ جب اس چھوٹے بھائی کی وفات ہوئی تو کسی شخص نے خواب میں حضور ﷺ کی زیارت کی، حضور ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ جس کسی کو کوئی حاجت ہو ان کی قبر کے پاس بیٹھ کر اللہ سے دعاء کیا کرے۔

فائدہ: اس واقعہ سے اہل سنت کا عقیدہ ثابت ہوتا ہے کہ اللہ والوں کی قبروں پر دعائیں قبول ہوتی ہیں

☆ حضور پاک ﷺ نور بھی ہیں

اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ حضور ﷺ نور بھی ہیں اور افضل البشر بھی ہیں، لیکن اعتراض کرنے والے حضرات حضور ﷺ کے نور ہونے کے قائل ہی نہیں ہیں، ہم دلیل تھانوی صاحب کی کتاب سے پیش کر رہے ہیں، کہ حضور ﷺ نور بھی

ہیں دلیل ملاحظہ فرمائیں:

(۱) دلیل: مولانا اشرف تھانوی صاحب اپنی کتاب نشر الطیب کے صفحہ نمبر:۵ پر ایک حدیث تحریر کرتے ہیں: حضرت جابر رضی اللہ عنہ نے عرض کیا کہ یا رسول اللہ ﷺ سب سے پہلے اللہ تعالیٰ نے کون سی چیز پیدا کی۔ آپ ﷺ نے فرمایا اللہ پاک نے تمام اشیاء سے پہلے تیرے نبی کا نور اپنے نور سے پیدا فرمایا۔

فائدہ: حضرت جابر رضی اللہ عنہ کے عرض کرنے پر آقا ﷺ نے فرمایا کہ سب سے پہلے اللہ پاک نے تیرے نبی کے نور کو پیدا فرمایا، تو ثابت ہوا حضور ﷺ کی اصل نور ہی ہے اور بشریت حجاب تھا۔

(۲) دلیل: اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال جلد: ا فضائل درود شریف کے صفحہ نمبر: ۱۰۸۰ پر مولانا قاسم نانوتوی کے نعت کے اشعار پیش کرتے ہیں:

(۱) کہاں وہ رتبہ، کہاں اقلِ نارساء اپنی
کہاں وہ نورِ خدا اور کہاں یہ دیدائے زار
(۲) چراغ گل ہے اس نور کے آگے
زباں کا منہ نہیں جو کرے مدح میں کرے گفتار
(۳) رہا جمال پہ تیرے حجاب بشریت
نہ جانا کون ہے کچھ بھی کسی نے جز ستار

فائدہ: دیوبندی مولوی قاسم نانوتوی کے شعر سے ثابت ہوتا ہے کہ حضور

ﷺ نور بھی ہیں مولوی قاسم نانوتوی نے ہر شعر میں حضور ﷺ کو نور کہا ہے۔ اور دیوبندی مفتی اعظم رشید لدھیانوی صاحب اپنی کتاب احسن الفتاویٰ کے صفحہ نمبر: ۵۷ پر لکھتے ہیں کہ حضور ﷺ نور بھی ہیں اور بشر بھی ہیں

☆حضور ﷺ نور ہیں اور حضور ﷺ کا سایہ نہیں تھا

اکابر علمائے دیوبند رشید گنگوہی صاحب اپنی کتاب امداد السلوک کے صفحہ نمبر: ۲۰۱ پر تحریر کرتے ہیں لفظ بالفظ ملاحظہ فرمائیں۔

حق تعالیٰ نے قرآن کریم میں اپنے حبیب ﷺ کی شان میں فرمایا ہے

قد جاء کم من اللہ نور و کتب مبین

ترجمہ: بے شک آیا تمہارے پاس حق تعالیٰ کی طرف سے نور اور واضح کتاب۔

گنگوہی صاحب اس آیت کے تحت آگے لکھتے ہیں کہ اس آیت میں نور سے مراد حبیب خدا حضرت محمد ﷺ کی ذات پاک ہے۔

گنگوہی صاحب دوسری آیت کریمہ پیش کرتے ہیں کہ:

حق تعالیٰ نے اپنے حبیب ﷺ کی شان میں فرمایا ہے

یا یھا النبی انا ارسلنک شاھدا ومبشرا و نذیرا و داعیا الی للہ باذنہ و سراجا منیرا.

ترجمہ: اے نبی ہم نے آپ کو نور اور مژدہ سنانے والا اور ڈر سنانے والا اور اللہ کی طرف بلانے والا اور چراغ منیر بنا کر بھیجا ہے۔

منیر روشن کرنے والے اور دوسروں کو نور دینے والے کو کہتے ہیں۔ پس اگر کسی دوسرے کو روشن کرنا انسان کے لئے محال ہوتا تو ذات پاک ﷺ کو بھی یہ کمال حاصل نہ ہوتا کیونکہ حضرت ﷺ بھی تو اولاد آدم ہی میں ہیں۔ لیکن حضرت ﷺ

نے اپنی ذات کو اتنا مطہر بنالیا کہ نور خالص بن گئے اور حق تعالیٰ نے آپ ﷺ کو نور فرمایا اور شہرت سے ثابت ہے کہ حضور ﷺ کا سایہ نہ تھا اور ظاہر ہے کہ نور کے علاوہ ہر جسم کا سایہ ضرور ہوتا ہے۔ اسی طرح آپ ﷺ نے اپنے متبعین (صحابہ) کو اس قدر تزکیہ اور تصفیہ بخشا کہ وہ بھی نور بن گئے، چنانچہ ان کی کرامت وغیرہ کی حکایتوں سے کتابیں بھری ہیں نقل کی حاجت نہیں۔

گنگوہی صاحب کی اس تحریر سے مندرجہ ذیل باتیں ثابت ہوتی ہیں:

(۱) حضور ﷺ نور ہیں

(۲) حضور ﷺ نے اپنے متبعین (صحابہ) کو اپنے فیض سے نور بنادیا۔

(۳) حضور ﷺ کا سایہ نہیں تھا۔

فایدہ: اہل سنت کا بھی یہی عقیدہ ہے کہ حضور ﷺ نور ہیں اور آپ ﷺ کا سایہ نہیں تھا۔

☆حضور ﷺ کی محبت ھی اللہ کی محبت کی علامت ھے

اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ اگر یہ جاننا ہو کہ کس کے دل میں اللہ تعالیٰ کی محبت ہے تو اس کے دل کو حضور ﷺ کی محبت کی کسوٹی پر پرکھا جائیگا کہ اس کے دل میں حضور ﷺ کی محبت ہے یا نہیں۔ اسی عقیدے کے تحت دیوبندی مولوی اشرف تھانوی صاحب اپنی کتاب نشر الطیب کے صفحہ نمبر:۲۱۹ پر تحریر کرتے ہیں کہ اے عاشق تو حضور ﷺ کے عشق میں خوب ترقی کر، اور حضور ﷺ کے ذکر سے اپنی زبان کو معطر کر، کسی کی پرواہ مت کر کیونکہ اللہ کی محبت کی علامت یہ ہے کہ اس کے حبیب ﷺ سے محبت کی جائے۔

فائدہ: تھانوی صاحب کے اس قول سے ثابت ہوتا ہے کہ جس کے دل میں

حضور ﷺ کی محبت نہیں، اس کے دل میں اللہ کی محبت نہیں۔

☆مزار پر فاتحہ پڑھنے کی دلیل

مولانا اشرف تھانوی صاحب اپنی کتاب ارواح ثلثہ کے صفحہ نمبر:۳۴ حکایت نمبر (۱۳) میں لکھتے ہیں مولوی عبد القیوم صاحب فرماتے تھے کہ شاہ عبد العزیز رحمۃ علیہ کا معمول تھا کہ شاہ ولی اللہ اور شاہ عبد الرحیم کے مزارات پر سال بھر میں ایک مرتبہ تشریف لے جاتے، اور وہاں جا کر فاتحہ اور مثنوی شریف کا وعظ کرتے۔

فائدہ: مولانا اشرف تھانوی صاحب کی کتاب کی اس دلیل سے ثابت ہوا کہ مزار پر فاتحہ وقرآن پڑھنا جائز ہے

☆ولیوں کی محبت سے قرب الٰھی حاصل ھوتا ھے

اہل سنت اولیاء اللہ کی محبت کو اللہ کے قرب کا ذریعہ سمجھتے ہیں

مولانا اشرف تھانوی صاحب اپنی کتاب ارواح ثلٰثہ کے صفحہ نمبر:۷ پر لکھتے ہیں" جو یہ چاہتا ہے کہ اسے خدا کی قربت حاصل ہو، تو اس کو اللہ کے ولیوں کی محبت اختیار کرنا چاہئے۔

فائدہ: اہل سنت کو اولیاء اللہ سے محبت ہے اس لئے اہل سنت مزار پر حاضری دیتے ہیں، مزار پاک پر حاضری دینا اولیاء اللہ کی محبت کی علامت ہے۔

☆یا رسول اللہ ﷺ کھنے کا جواز

اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ حضور ﷺ کو دور سے یا رسول اللہ ﷺ پکارنا جائز ہے، دلیل اعتراض کرنے والوں کی کتاب سے ملاحظہ فرمائیں:

اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا اپنی کتاب فضائل اعمال (ہندی) جلد:۱ فضائل درود شریف کے صفحہ نمبر:۱۰۵۵اپر ایک درود شریف نقل کرتے ہیں

صلّی اللہ علیک یا محمد صلّی اللہ علیک یا محمد صلّی اللہ علیک یا محمد

آگے لکھا ہے کہ حضرت شبلی رحمۃ اللہ علیہ ہر نماز کے بعد یہی درود شریف پڑھتے تھے۔

فائدہ: حضرت شبلی رحمۃ اللہ علیہ کا ہر نماز کے بعد یہی درود شریف پڑھنا یہ بتا رہا ہے کہ حضور پاک ﷺ کو دور سے یا محمد ﷺ یا رسول اللہ ﷺ کہنا جائز ہے۔

نوٹ: اعتراض کرنے والوں کا اجماعی عقیدہ یہ ہے کہ حضور ﷺ کو دور یا نزدیک سے یا محمد ﷺ یا رسول اللہ ﷺ کہنا شرک ہے۔

☆ اولیاء اللہ کو قبر کے اندر سے بیمار کو شفاء دینے کا اختیار حاصل ھے

مولانا اشرف تھانوی صاحب اپنی کتاب ارواح ثلٰثہ کے صفحہ نمبر:۲۵۱ پر حکایت نمبر:۳۰۱ میں لکھتے ہیں کہ مولوی معین الدین صاحب، مولانا محمد یعقوب صاحب کے سب سے بڑے صاحبزادے تھے وہ حضرت مولانا کی ایک کرامت، جو بعد وفات واقع ہوئی' بیان فرماتے تھے کہ ایک مرتبہ ہمارے نانوتہ میں جاڑہ (بخار) کی بہت کثرت ہوئی، جو شخص مولانا کی قبر سے مٹی لے جا کر جسم پر کہیں باندھ لیتا اسے آرام ہو جاتا، لوگ کثرت سے مٹی لے جانے لگے، جب ہی میں مٹی ڈلواؤں تب ہی ختم، کئی مرتبہ مٹی ڈلوا چکا، پریشان ہو کر ایک بار مولانا کی قبر پر میں نے کہا، آپ کی تو کرامت ہوگئی اور ہماری مصیبت ہوگئی، پھر کہا یاد رکھو کہ اگر اب کی مرتبہ کوئی اچھا ہوا تو ہم مٹی نہ ڈالیں گے ایسے ہی پڑے رہنا، لوگ جوتے پہنے تمہارے اوپر ایسے ہی چلیں گے، بس اسی دن سے پھر کسی کو آرام نہ ہوا، جیسے شہرت آرام کی ہوئی تھی ویسے ہی یہ شہرت ہوگئی کہ اب آرام نہیں ہوتا، پھر لوگوں نے مٹی لے جانا بند کر دیا۔

اس واقعہ سے کئی اہل سنت کے عقیدے ثابت ہوتے ہیں ملاحظہ فرمائیں:

۱۔ فائدہ: اس واقعہ سے ایک بات تو یہ ثابت ہوتی ہے کہ قبر کے اندر سے مرنے والا ہماری بات سنتا ہے

۲۔ فائدہ: قبر کی مٹی سے شفاء ملتی ہے

۳۔ فائدہ: مرنے کے بعد بیماری سے شفاء دیکر پھر شفا روک دینے کا اختیار۔

خلاصہ کلام: ہم اہل سنت کا بھی یہی عقیدہ ہے کہ اللہ کی عطا سے اولیاء اللہ کے مزار سے شفاء ملتی ہے اور اولیاء اللہ کو بیماری سے شفا دینے کا اختیار ہے، اعتراض کرنے والے حضرات اس عقیدے کو شرک بولتے ہیں۔

☆ حضور ﷺ کا روضہ اقدس، ہر شے سے افضل ھے

دلیل نمبر:۱ ۔اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا اپنی کتاب فضائل اعمال (ہندی) جلد:۱ فضائل حج کے صفحہ نمبر:۹۷۵ سے ۹۷۶ تک لفظ بالفظ ملاحظہ فرمائیں:

مدینہ طیبہ کی وہ زمین، جو حضور ﷺ کے جسم مبارک سے متصل (لگی ہوئی) ہے اس میں علماء کا اختلاف نہیں ہے وہ بل اتفاق سب علماء کے نزدیک سب جگاہوں سے افضل ہے ابن اسا کر، قاضی عیاض وغیرہ حضرات نے بھی اس پر ساری امت کا اتفاق اور اجماع نقل کیا ہے کہ یہ زمین کا حصہ کعبہ سے بھی افضل ہے بلکہ قاضی عیاض رحمۃ اللہ علیہ نے لکھا ہے کہ عرش اعظم سے بھی افضل ہے۔

دلیل نمبر:۲ ۔اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال جلد:۱ فضائل حج کے صفحہ نمبر:۹۷۶ پر لکھتے ہیں کہ کعبہ شریف حضور ﷺ کے روضہ اقدس کے سوا دنیا کی ہر جگہ سے افضل ہے (اللہ کی مخلوق میں حضور

ﷺ کا روضہ سب سے افضل ہے)

دلیل نمبر:۳ ۔اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا اپنی کتاب فضائل اعمال جلد:۱ فضائل حج کے صفحہ نمبر:۹۹۳ پر ایک حدیث روایت کرتے ہیں کہ حضور ﷺ کا ارشاد ہے جو جگہ میرے گھر یعنی میری قبر اور میرے منبر کے درمیان ہے، جنت کے باغوں میں سے ایک باغ ہے اور منبر میری حوض پر ہے ۔اس حدیث کی شرح میں مولانا ذکریا امام ابن حجر کا قول پیش کرتے ہیں، حافظ ابن حجر رحمۃ علیہ فتح الباری میں فرماتے ہیں کہ اس حدیث سے بھی مدینہ طیبہ، مکہ مکرمہ سے افضل ہونے پر استدلال کیا ہے۔

فائدہ نمبر: ۱ فضائل اعمال کی اس عبارت سے ثابت ہوتا ہے کہ حضورﷺ کا روضہ پاک کعبہ، عرش اعظم سے افضل ہے اور کعبہ و عرش اعظم کائنات کی ہر شئے سے افضل ہے حضورﷺ کا روضہ مدینہ میں ہے تو مدینہ منورہ مکہ معظّمہ سے افضل ہوا، یہی اہل سنت کا عقیدہ ہے۔

فائدہ نمبر :۲ واضح طور پر ثابت ہوا، مدینہ منورہ مکہ معظّمہ سے افضل ہے۔یہی عقیدہ اہل سنت کا ہے۔

☆دعاء کے وقت حضور ﷺ کے روضہ انور کی جانب رخ کرنا چاهئے

اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال جلد:۲ فضائل حج کے صفحہ نمبر:۹۲۷ پر لکھتے ہیں خلیفہ عباسیہ میں سے منصور عباسی نے حضرت امام مالک رحمۃ اللہ علیہ سے دریافت کیا کہ دعا کے وقت حضور اقدسﷺ کی طرف چہرہ کروں یا قبلہ کی طرف؟ تو حضرت امام مالک رحمۃ علیہ نے فرمایا کہ حضورﷺ کی طرف سے چہرہ کیوں ہٹائیں جبکہ تیرا اور تیرے والد آدم علیہ السلام کا وسیلہ

بھی حضورﷺ ہی ہیں، حضورﷺ کی طرف منہ کر کہ شفاعت چاہو۔

فائدہ :اہل سنت کا عقیدہ ہے جب حضورﷺ کا روضہ پاک ہر جگہ سے افضل ہے، تو کعبہ کا بھی کعبہ ہوا اس لئے امام مالک نے دعا میں چہرہ حضورﷺ کی طرف سے پھیرنے کے لئے منع کر دیا۔

حاجیوں آؤ شہنشاہ کا روضہ دیکھو
کعبہ تو دیکھ چکے کعبے کا کعبہ دیکھو

☆حضور ﷺ کے روضہ پاك کی زیارت افضل ترین عبادت هے

اہل سنت کا یہ عقیدہ ہے کہ حضور ﷺ کے روضہ پاک کی زیارت افضل ترین عبادت ہے، دلیل ملاحظہ فرمائیں:

اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال جلد:۲ فضائل حج کے صفحہ نمبر:۸۹۷ پر لکھتے ہیں حضورﷺ کے روضہ پاک کی زیارت اہم ترین نیکیوں میں سے ایک نیکی ہے اور افضل ترین عبادت ہے۔

☆اولیاء کرام کے قرب میں دفن هونا ،نفع بخش هے

اہل سنت کا عقیدہ یہ ہے کہ اولیاء اللہ کے قرب میں دفن ہونا نفع بخش ہے دلیل ملاحظہ فرمائیں:

مولانا اشرف تھانوی صاحب اپنی کتاب ارواح ثلٰثہ کے صفحہ نمبر:۳۸۵ پر حکایت نمبر:۴۵۳ میں لکھتے ہیں ہے کہ مولوی قاسم نانوتوی سے کسی نے سوال کیا کہ اولیاء اللہ کے مزار کے پاس اپنی قبر بنوائیں تو اس سے کیا فائدہ ہے، مولوی قاسم نانوتوی نے جواب دیا کہ اولیاء اللہ کی قبروں پر رحمت کی ہوائیں چلتی ہیں

،اور آس پاس والوں کو بھی لگتی ہیں رحمت کے اثرات سب کو پہنچتے ہیں۔

☆اولیاء اللہ بعد وصال بھی زندہ رہتے ھیں

اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ اولیاء اللہ بعد وصال بھی زندہ ہوتے ہیں، دلیل ملاحظہ فرمائیں:

اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال جلد:۲ فضائل حج کے صفحہ نمبر:۱۰۶۶ پر ایک واقعہ نقل کرتے ہیں کہ ایک بزرگ فرماتے ہیں کہ میں مکہ مکرمہ میں تھا ایک مرتبہ میں نے ایک نوجوان کی لاش دیکھی، جو نہایت خوبصورت تھا میں اس کے چہرے کو دیکھ ہی رہا تھا، مرنے والے نے مجھ سے کہا کہ کیا تمہیں پتا نہیں عشاق (ولی اللہ) مرتے نہیں اگرچہ ظاہر میں مر جائیں۔

☆علم غیب کا بیان

اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے اپنے حبیب پاک ﷺ کو علم غیب عطا فرمایا ہے اور اعتراض کرنے والے حضرات حضور ﷺ کے علم غیب کے منکر ہیں۔ اس لئے ہم نے علم غیب کے دلائل زیادہ لئے ہیں۔

دلیل نمبر:(۱) مولانا اشرف تھانوی صاحب اپنی کتاب ارواح ثلٰثہ کے صفحہ نمبر:۲۷۷ پر حکایت نمبر:۳۵۰ میں لکھتے ہیں ہے کہ مولوی شاہ عبد الرحیم رائے پوری کا قلب بڑا نورانی تھا، میں ان کے پاس بیٹھنے سے ڈرتا تھا کہ کہیں میرے عیب منکشف (ظاہر) نہ ہو جائیں۔

۱۔ فائدہ: تھانوی صاحب کا عقیدہ ظاہر ہے کہ مولوی شاہ عبدالرحیم رائے پوری کا قلب بڑا نورانی تھا، میں ان کے پاس بیٹھنے سے ڈرتا تھا کہ کہیں میرے عیب منکشف نہ ہو جائیں اور کسی کے عیب کا منکشف ہو جانا یہ غیب کی بات ہے ،یعنی وہ دل کی بات جان لیتے تھے، دل کی بات جان لینا علم غیب کہلاتا ہے۔

دلیل نمبر:(۲) اکابر علمائے دیوبند مولانا عاشق الٰہی صاحب اپنی کتاب تذکرۃ الرشید جلد دوم صفحہ نمبر:۳۹۰ پر لکھتے ہیں کہ کسی نے خواب دیکھا کہ کئی بزرگ کہہ رہے ہیں کہ رشید گنگوہی صاحب کو حق تعالیٰ نے وہ علم دیا ہے کہ کوئی حاضر ہونے والا اسلام علیکم کہتا ہے تو گنگوہی صاحب اس کے ارادے سے واقف ہو جاتے ہیں۔

فائدہ: دل کے ارادے سے واقف ہو جانے کو علم غیب کہتے ہیں یہاں تو گنگوہی جی تک کا علم غیب ثابت ہو رہا ہے۔

☆اختیار، علم غیب ،حاضر و ناظر

(۱) اکابر علمائے دیوبند مولانا عاشق الٰہی صاحب اپنی کتاب تذکرۃ الرشید حصہ دوم کے صفحہ نمبر:۳۲۳۔۳۲۴ پر ایک مجذوب کے تعلق سے ایک واقعہ لکھتے ہیں کہ حضرت حاجی صاحب شہید جب عرب جا رہے تھے، تو ایک دن جہاز میں حضرت کے ہاتھ سے لوٹا چھوٹ کر سمندر میں گر گیا، ذرا سی دیر گزری تھی کہ ایک ہاتھ سمندر میں سے لوٹا تھامے ہوئے نکلا اور حضرت حاجی صاحب کے ہاتھ میں پکڑا کر غائب ہو گیا ادھر لوہاری میں ان مجذوب صاحب نے حضرت کے خدام سے فرمایا کہ ''تمہارے حاجی کے ہاتھ سے لوٹا چھوٹ کر سمندر میں گر گیا تھا میں نے ان کو لوٹا پکڑایا'' حضرت کے خدام نے سمجھا کہ بڑائی ہانک رہے ہیں، جب حضرت حاجی صاحب حج سے فارغ ہو کر واپس آئے اور لوہاری میں تشریف لائے تو کسی کو مجذوب کی یہ بات یاد آ گئی انہوں نے حضرت سے عرض کیا، پھر آپ نے فرمایا سچ ہے بیشک یہ واقعہ جہاز میں پیش آیا مگر اس وقت وہ ہاتھ میری شناخت میں نہیں آیا کہ کس کا ہے۔

اس کتاب کے اس واقعہ سے چند اہل سنت کے عقیدے ثابت ہوتے ہیں

ملاحظہ فرمائیں:

عقیدہ نمبر ۱: ان مجذوب صاحب کو کیسے پتا چلا کہ حاجی صاحب کا لوٹا سمندر میں گر گیا ہے، اس سے مجذوب صاحب کا علم غیب ثابت ہوتا ہے۔

عقیدہ نمبر ۲: اس مجذوب نے کیسے دور سے لوٹا اٹھا کر دے دیا، اس سے حاضر و ناظر اور تصرف کا عقیدہ ثابت ہوتا ہے۔ ایک جگہ ہوتے ہوئے دوسری جگہ پر اپنی قدرت کو ظاہر کرنا تصرف کہلاتا ہے۔

خلاصہ: جب مجذوب دور سے دیکھ رہے ہیں کہ لوٹا گر گیا اور بغیر کہے دور سے ہی اٹھا کر دے بھی دیا۔ اب دوسرا پہلو بھی غور کریں، اگر حاجی صاحب لوٹا گرنے پر وہیں دور سے یہ کہتے یا مجذوب صاحب مدد کریئے تو مجذوب صاحب تب بھی دور سے سن بھی لیتے اور لوٹا اٹھا کر دے بھی دیتے۔

لیکن اگر غوث اعظم رضی اللہ عنہ سے یہی عقیدہ رکھیں تو اعتراض کرنے والے حضرات اس کو شرک بولتے ہیں۔ اس واقعہ سے ثابت ہوتا ہے کہ اللہ کی عطا سے اولیاء اللہ دور کی بات جان بھی لیتے ہیں اور مدد بھی کرتے ہیں۔

☆علم غیب

اکابر علمائے دیوبند مولانا ذکریا صاحب اپنی کتاب فضائل اعمال جلد:۱ فضائل ذکر کے صفہ نمبر:۶۵۶ پر لکھتے ہیں امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ عنہ جب کسی شخص کو وضو کرتے دیکھتے تو پانی کے قطروں سے بتا دیتے کہ اس نے صغیرہ گناہ کیا ہے یا کبیرہ گناہ۔

فائدہ: امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ عنہ پانی کے قطروں سے چھپے گناہوں کو جان لیتے تھے اور صرف یہی نہیں گناہ چھوٹا ہے یا بڑا یہ بھی بتا دیا کرتے تھے۔ اس واقعہ سے امام اعظم کا علم غیب ثابت ہوتا ہے۔

☆حضور ﷺ کی تعریف کیسے ہو، اللہ کے سوا کوئی نہیں جانتا

اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ کوئی حضور ﷺ کی حقیقی تعریف کرنا چاہے تو بھی نہیں کر سکتا سوائے اللہ کے، دلیل ملاحظہ فرمائیں:

اکابر علمائے دیوبند مولانا اشرف تھانوی صاحب اپنی کتاب نشر الطیب کے صفہ نمبر:۱۸۳ پر لکھتے ہیں کہ حضور ﷺ دنیا اور آخرت کے سردار ہیں۔ اور حضور ﷺ کی ذات کی طرف جو خوبیاں چاہو منسوب کرو، وہ قابل تسلیم ہونگی اور آپ جس قدر عظیم تعریفیں، بڑائیاں کرو سب صحیح ہونگی کیونکہ محمد ﷺ کے رسالت کے فضل کی کوئی حد نہیں کہ کوئی اپنی زبان سے آپ ﷺ کی تعریف کر سکے۔

فائدہ: تھانوی صاحب کے اس قول سے ثابت ہوتا ہے کہ حضور ﷺ کا مرتبہ اللہ کے سوا کوئی نہیں جانتا۔

نوٹ: اہل سنت (بریلویوں) نے اپنے عقیدے ثابت کر دیے، اعتراض کرنے والوں کے اکابر علمائوں کی کتابوں سے، ہم دعوت حق دیتے ہیں کہ قرآن و سنت کے مطابق اپنے عقیدے درست کر لیں۔ اللہ تعالیٰ سے دعا ہے کہ اپنے حبیب ﷺ کے صدقے امت میں آپسی محبت عطا فرمائیں۔